—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जून, 2005 वर्ष 4 अंक 4

नेकी से बदी हटाओ

नेकी और बदी बराबर नहीं होतीं, नेकी के जरीअे बदी को दूर करो। (इस बरताव से) अचानक आप का दुश्मन ऐसा हो जाएगा जैसे गहरा दोस्त।

(पवित्र कुर्आन 41:35)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

•	बातें मेल मिलाप की	सम्पादकीय.....3
•	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
•	प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
•	हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 7
•	हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अख़्लाक़	अ़ल्लामा शिब्ली नोमानी 9
•	अव्यवस्थाओं के वास्तविक कारण	अ़ली मियां 12
•	संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अ़ब्दुस्सलाम किदवई..... 13
•	तुझे फ़ज़्ल करते नहीं लगती बार	ख़ैरुन्निसा बेहतर..... 15
•	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 16
•	शरीअ़त तथा साम्प्रदायिकता	डा० मसऊद आ़लम कासिमी 17
•	ज्ञान का प्रसार और उलमा का महत्व	डा० मु० इज्तिबा नदवी 20
•	आपसी मेल जोल	इदारा..... 23
•	अपने को बदलने की कोशिश कीजिए	मु० गुफ़रान नदवी 24
•	जिन्न क्या कर सकते हैं ?	अबू मर्गूब 25
•	औलाद की तर्बियत में नमाज का रोल	हैदर अली नदवी 26
•	नई नई तिब्बी बातें	इदारा 27
•	उम्मुल मोमिनीन हजरत ज़ैनब (रज़ि०)	सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी..... 29
•	इश्क व महब्बत	हकीम मु० अख़्तर 31
•	जवानी की शरअ़ी हैसियत व कीमत	मु० गुफ़रान नदवी 32
•	हंसी प्रमोद भी और औषधि भी	डा० एस०एम० आरिफीन 34
•	हाथी के दांत	इदारा 35
•	आवश्यकता निराश की नहीं ईमानी क्षमता की	अमीनुद्दीन शुजाअ 38
•	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी..... 40

❑❑❑

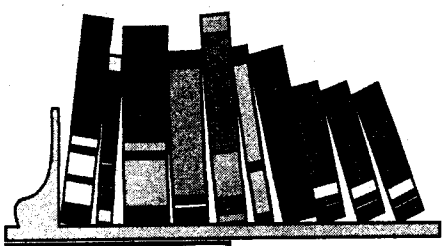

बातें मेल मिलाप की

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

महब्बत इन्सान की फ़ितरत है और और अ़दावत का कोई सबब होता है। जहां अ़दावत नज़र आए अ़दावत का सबब तलाश किया जाए और मुम्किन हो तो सबब दूर किया जाए सबब दूर होते ही महब्बत लौट आएगी। अगर अ़दावत के सबब का दूर करना मुम्किन न होगा तो महब्बत का लौटना भी ना मुम्किन हो जाएगा। मुआ़मला दीनी अ़दावत का हो या दुन्यावी अ़दावत का, अ़दावत ख़त्म करने के लिए अ़दावत का सबब दूर करना लाज़िमी होगा।

अल्लाह तआ़ला का एलान है "इन्नमल्मुअ्मिनून इख़्वतुन् फ़ अस्लिहू बैन अख़वैकुम वत्तक़ुल्लाह लअ़ल्लकुम् तुर्हमून्" (अल–हुजुरात : १०) (ईमान वाले तो सब भाई हैं, पस चाहिए कि अपने दो भाइयों में मेल करा दिया करो ताकि तुम पर रहमत की जाए।) लेकिन आज ईमान वालों का क्या हाल है? सलाम करना तो दूर की बात है बाज़ लोग सलाम का जवाब तक नहीं देते। बाज़ लोगों ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे डाली। बाहम दावते खाना छोड़ दीं । साथ बैठने और साथ सफ़र करने से गुरेज़ किया, बाहम दावतें कबूल करने से इन्कार कर दिया, कैसा बुरा हाल है उम्मत का।

अगर किसी ने किसी को क़त्ल कर दिया है तो ज़ाहिर है मक़्तूल के अ़ज़ीज़ व अक़ारिब क़ातिल से दोस्ती नहीं कर सकते। अगर क़ातिल नादिम हो, ताइब हो और मक्तूल के अ़ज़ीज़ों को किसी तरह राज़ी कर ले तो हालात बदल सकते हैं। अगर किसी ने किसी की जायदाद हड़प कर ली है तो वह अगर जायदाद वापस कर दे तो दुश्मनी ख़त्म हो सकती है ग़रज़ कि दुश्मनी का सबब दूर कर दिया जाए तो फिर दोस्ती हो सकती है।

इसी तरह दीनीं मुआ़मलात में जो दुश्मनियां चल रही हैं अगर उन के अस्बाब मालूम कर के उन अस्बाब को दूर कर दिया जाए तो यह दुश्मनी भी ख़त्म हो सकती है। इस सिलसिले में उम्मत के हज़ारहा बुज़ुर्गों ने अपनी उम्रें खपा दीं और लाखों लोगों की ग़लत फहमियां दूर कीं, नदवतुल उलमा के मक़ासिद में से सुल्हे बैनल मुस्लिमीन एक मक़्सद ही रहा है। उनही पाक रूहों की तक्लीद में मैंने भी इस मक़्सद को अपना मिशन बनाया। अल्लाह तआ़ला ने बहुत हद तक काम्याबी दी इस वक्त इरादा किया कि सच्चा राही के ज़रीअे भी एक कोशिश करूं इस लिए कि हमारा सच्चा राही बरेलियों, देव बन्दियों और अहले हदीस तीनों में पढ़ा जाता है।

मेरा तो इन तीनों जमाअ़तों के लोगों से बराबर राबिता रहा है और इन तीनों मक्तब–ए–फिक्र के लोगों में मेरी रिश्तेदारियां भी हैं। और सच यह है कि मैंने इन तीनों जमाअ़तों के दीन्दारों से दीनी फाइदा भी उठाया है और जब अल्लाह तआ़ला ने इल्म से नवाज़ा तो तीनों को मिलाने की कोशिश में बराबर सरगर्दां रहा और अब भी यह भूत मुझ पर सवार है।

यह सहीह है कि अक़ीदा और इबादत के अ़मल में मैं नदवे के बुज़ुर्गों ख़ास तौर से हज़रत मौलाना अ़ली मियां रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नक़्शे कदम पर चलने की कोशिश करता रहा हूं साथ ही उनका तवस्सुअ़ भी अपनाया है। सन याद नहीं रहा ग़ालिबन १९७५ के क़रीब किसी सन में जब मैं वैलूर के सफ़र से पहले मुलाक़ात के लिए गया तो हज़रत ने फ़रमाया कि ख़ानकाह लतीफ़िया जाना और वहां के सज्जादा नशीन से मेरा सलाम कहना। मैंने इस हुक्म की तामील की थी, जब

मैं ख़ानक़ाह में हाज़िर हुआ तो ख़ानक़ाह के बुज़ुर्ग मुझ से बड़ी फ़राख़ दिली और ख़न्दापेशानी से मिले थे और जब हज़रत मौलाना का सलाम पहुंचाया तो बहुत ख़ुश हुए थे –

शाह मख़दूम अ़ब्दुलहक़ रूदौलवी (रह०) की ख़ानकाह वालों से भी मौलाना के तअ़ल्लुक़ात थे। शाह मुईनुद्दीन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े पाए के नदवी मुवर्रिख़ थे, वह तो मौलाना के महबूब तरीन रूफ़क़ा में से थे। मैंने देखा हज़रत मौलाना जब रूदौली तशरीफ ले गये तो हजरत मख़्दूम साहिब (रह०) के मज़ार पर हाज़िरी दी और फ़ातिहा पढ़ी। हज़रत मौलाना, जनाब मौलाना मुर्तज़ा साहिब मुज़ाहिरी (रह०) (साबिक़ लाइबरेरियन लाइबरेरी नदवतुल उ़लमा) के साथ किछौछा भी तशरीफ़ ले गये और वहां के बुज़ुर्गों से मिले। ख़ानक़ाह मुजीबिया बिहार और ख़ानक़ाह फुलवारी शरीफ़ के लोगों से भी मौलाना के अच्छे तअ़ल्लुक़ात रहे। अहले हदीस हजरात से भी मौलाना की बे तकल्लुफ़ी के तअ़ल्लुक़ात रहे और न जाने कितने अहले हदीस हजरात ने नदवे से फ़राग़त हासिल की और हमेशा एक अच्छी ख़ासी ताद़ाद अहले हदीस तलबा की नदवे में रहती है। असातिज़ा और स्टाफ़ में भी अहले हदीस हज़रात हैं। यह सहीह है कि इन तीनों जमाअ़तों के लोगों में कभी–कभी कहीं–कहीं नोक झोंक भी हो जाती है उसीके नतीजे में बाहम अ़दावतें पैदा हो जाती हैं लेकिन सच यह है कि इन इख़्तिलाफ़ात में बहुत सी ग़लत फ़हमियों को भी दख़्ल है, अगर यह ग़लत फ़हमियां दूर हो जाएं तो दुश्मनी ख़त्म हो सकती है। जो इख़्तिलाफात नुसूस के फ़हम में हुए हैं उन में तो एक दूसरे को बरदाश्त करना चाहिए जबकि मुख़ालिफ़ के मफ़हूम का इम्कान हो लेकिन ग़लत फ़हमियों और नासमझियों का तदारूक हिकमत से करना चाहिए।

मेरे एक मरहूम दोस्त मुझसे उलझ गये कि शिर्क करने वाले को हम मुसलमान कैसे तस्लीम कर सकते हैं? मैंने कहा बेशक मुश्रिक को मुस्लिम नहीं माना जा सकता है लेकिन अगर एक कल्मा गो के, ज़ाहिर में शिर्क लगने वाले क़ौल व अ़मल की तावील हो सकती हो तो उसे सीधे मुश्रिक न समझें और हिकमत से उसकी इस्लाह की कोशिश करें। उन्होंने मिसाल दी कि फुलां का बच्चा बीमार है वह बराबर मज़ार पर इस ग़रज़ से हाज़िरी देते हैं कि उनका बच्चा अच्छा हो जाए। मैंने कहा इसकी तावील आप यह करें कि वह क़ब्र पर हाज़िरी तो इस लिए देता होगा कि एक मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत में सवाब है और बुज़ुर्ग की क़ब्र तो नुज़ूले रहमते इलाही की जगह है, हो सकता है कि इस सवाब की बरकत और रहमते इलाही की जगह पहुंचने के सबब बीमारी से शिफ़ा की उम्मीद रखता हो और यह शिर्क नहीं है। फिर उसको ज़ियारते क़ब्र का मस्नून तरीक़ा समझा कर बताना चाहिए कि इस तरह हाज़िरी दोगे तो सवाब भी ज़ियादा मिलेगा और अल्लाह की रहमत भी ज़ियादा मुतवज्जेह होगी उसे सलातुलहाजत के ज़रीअ़े मांगना सिखाएं उनको बताया कि मैंने कई को मज़ार पर जाने से भी न रोका और शिर्क के वाहमे से भी निकाल लिया।

मेरे एक अ़ज़ीज़ कहने लगे कि जो शख़्स हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तौहीन करे उसे हम अपना दीनी भाई कैसे समझ सकते हैं मैंने कहा ऐसा शख़्स हरगिज़ हरगिज़ हमारा दीनी भाई नहीं है। लेकिन अगर ऐसा हो कि वह तौहीन न करता हो उस पर किसी ने ग़लत फ़हमी से या जान बूझ कर झूट लगा दिया हो , ऐसी सूरत में तो उसे बेदीन कहना और समझना **खुद बेदीनी होगी।** उन्होंने कहा मैंने दो मौलानाओं की गुफ्तगू सुनी है हमारे मौलाना कह रहे थे **आप की किताब के फ़ुलां फ़ुलां जुम्लों में खुली हुई तोहीन है।** मैंने पूछा, तो क्या दूसरे मौलाना जवाब दे रहे थे कि हां (मुआ़ज़ल्लाह) तौहीन करना जाइज़ है? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि वह कह रहे थे (मुआज़ल्लाह) तौहीने रसूल (साल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तो कुफ़्र है मगर इन जुमलों से तौहीन नहीं साबित होती। मैंने कहा क्या इससे यह बात नहीं समझ में आती कि तौहीने रसूल को दोनों कुफ़्र समझते हैं झगड़ा सिर्फ़ कुछ जुम्लों के मतलब समझने में है। ऐसी लुचर बात पर

शेष पृष्ठ 15 पर

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

ह्सद :

और हवस मत करो, जिस चीज पर अल्लाह ने तुममें से एक को एक पर बड़ाई दी। (अन्निसा : ३२)

अल्लाह तआला किसी को दुन्या या दीन की इज़्ज़त दें उसको देख कर अगर तुम्हारे दिल में भी उस इज्जत को हासिल करने का ख़याल पैदा हो तो इसको रश्क कहते हैं। यह बुरी आदत नहीं है बल्कि दीन की बातों में रश्क अच्छी चीज है, लेकिन इन ही चीजों को देख कर जलन पैदा हो और यह जी चाहे कि उस आदमी के पास वह निअ़मत न रहे तो यही हसद है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम लोग हसद से बचो क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है।

झगड़ा

और आपस में झगड़ा न करो, पस नाकाम हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (अन्फाल : ४६)

इस आयत में अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि आपस में झगड़ा न करो झगड़ा करने से दो बातें पैदा हो जाएंगी।

१. तुम नामुराद हो जाओगे, आपस की लड़ाई तुम को कमजोर कर देगी, दुश्मन के मुकाबले की ताब न रहेगी। तुम्हारी ताकत अन्दर के झगड़ों में सर्फ हो जाएगी और दूसरों के सामने आते हुए तुम्हारी हिम्मत न पड़ेगी।

२. जब तुम इस हालत को पहुंच जाओगे तो खुली हुई बात है कि तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। साख बिगड़ जाएगी किसी की निगाह में तुम्हारी इज़्ज़त न रहेगी।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फरमाया कि जिस तरह दीवार की एक ईंट दूसरी ईंट से मिलकर कलअ़ (गढ़ी) बन जाती है उसी तरह मुसलमानपें की जमाअत एक कलअ़ है। यह कलअ़ उसी वक्त बचा रहेगा जब तक एक ईंट दूसरी ईंट से मिली हुई है (यानी बाहमी इत्तिहाद काइम है) जब यह ईंट अपनी जगह से खिसकेगी पूरी दीवार जमीन पर आ जाएगी।

फ़रमाया सारे मुसलमान एक आदमी के जिस्म की तरह हैं, उस की आंख दुखे तो सारा बदन दुख महसूस करता है, सर में दर्द हो तो सारा जिस्म तक्लीफ में होता है। मतलब यह है कि यही हाल मुसलमानों का होना चाहिए कि उनमें से एक को भी तक्लीफ हो तो सारे मुसलमानों को वह तक्लीफ महसूस होना चाहिए।

फरमाया : मुसलमान मुसलमान का आईना है और मुसलमान मुसलमान का भाई है उस के नुक्सान को दूर करता है और उसके पीछे उसके घर की हिफाजत करता है।

क़त्ल :

अपनी जान को हलाक न करो। (अन्निसा : २६)

जिन्दगी अपनी हो या दूसरे की अल्लाह की निअ़मत है, इस की कद्र करना चाहिए और नाहक हलाक न करना चाहिए बाज आदमी रंज मुसीबत और बीमारी से तंग होकर अपने को हलाक कर डालते हैं। बाज रूपया पैसे से तंग होकर या और किसी वजह से अपनी औलाद को मार डालते हैं, बाज दुश्मनी या रूपया पैसा या किसी और चीज के लालच में दूसरों की जान ले लेते हैं यह सब गुनाह की बातें हैं।

हदीस में है कि एक जख्मी ने अपने आप को मरने से पहले कत्ल कर लिया तो अल्लाह तआला ने कहा कि मेरे बन्दे तू ने अपनी जान देने में जल्दी की मैंने तुझ पर जन्नत हराम कर दी।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जिस ने अपना गला घोंटा दोजख में उसका गला घोंटा जाएगा।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि अगर सारे जमीन और आसमान वाले मिलकर किसी बेगुनाह मुसलमान को कत्ल कर दें तो अल्लाह तआला सब को कियामत के दिन औंधे मुंह दोजख में डालेगा।

मुसलमानों के सिवा दूसरों को भी कत्ल करना गुनाह है। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जिस ने किसी मुआहिद (यानी जिस से तै हो गया कि यह हमारे साथ रहेगा) जिम्मी को कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू से महरूम (वंचित) है।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी

गुलू से परहेज़

४४१. ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया दीन आसान है जो भी दीन में गुलू करके अपने लिए मुश्किल पैदा करेगा तो वह दीन से आजिज आजाएगा (यानी वह हिम्मत हार कर बैठ जाएगा और उस का गुलू चल न सकेगा) पस बीच की सीधी राह चलो और (सवाब की) खुशखबरी दो और सुब्ह व शाम और रात के कुछ हिस्से से (अपनी इबादत में) मदद लो। (बुखारी)

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इबादात

४४२. हजरत जाबिर बिन सुमरा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं नमाजें हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ अदा किया करता था। आप की नमाजें मुअतदिल (मध्यवर्ती) हुआ करती थीं। न बहुत लम्बी न बहुत मुख्तसर। आपका खुत्बा भी दर्मियानी (मध्यवर्ती) होता था। (मुस्लिम)

नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैरवी महबूब अ़मल है।

४४३. हजरत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया क्या बात है कि कुछ लोग मेरे (एअ़तिदाल वाले) अमलों को नहीं अपनाते खुदा गवाह है कि मैं उनसे जियादा अल्लाह तआला को जानता हूं और उनसे जियादा अल्लाह तआला से डरता हूं। (बुखारी)

निशात (आनन्द) के वक़्त इबादत करना चाहिए।

४४४. हजरत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया जब तुम में से किसी को ऊंघ आए और नमाज पढ़ रहा हो तो चाहिए कि वह आराम कर ले ताकि नींद उससे दूर हो जाए, बेशक तुम में से जब कोई इस हाल में नमाज पढ़ रहा होता है कि वह ऊंघ रहा होता है तो वह नहीं जानता कि वह इस्तिग्फार कर रहा है कि वह अपने आप को बुरा भला कह रहा है। (बुखारी व मुस्लिम)

कुर्आन मजीद क़ियामत में सिफ़ारिश करेगा।

५४२. हजरत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कुर्आन पढ़ा करो यह कियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफारिश करेगा।

अटक अटक कर पढ़ने वालों के लिए दोहरा अज्र :

५४३. हजरत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया जो शख्स कुर्आन को समझ कर पढ़ता है तो वह बुजुर्ग फिरिश्तों के साथ होगा और जो अटक अटक कर मुश्किल से पढ़ता है तो उसके लिए दो गुना अज्र है।

कुर्आन मजीद पढ़ने वाला मोमिन

५४४. हजरत अूब मूसा अशअरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया जो मोमिन कुर्आने करीम पढ़ता है उसकी मिसाल तुरंज (एक किस्म का खुश्बूदार मीठा लीमू) की सी है। उस की खुशबू भी अच्छी और जाइका (स्वाद) भी अच्छा और जो मोमिन कुर्आन नहीं पढ़ता उसकी मिसाल खजूर जैसी है कि उसमें खुशबू तो नहीं मगर मजा मीठा है और जो मुनाफिक कुर्आन शरीफ पढ़ता है उसकी मिसाल रैहान (तुल्सा) जैसी है कि खुशबू अच्छी मगर जाइका कड़वा और जो मुनाफिक कुर्आन नहीं पढ़ता उस की मिसाल हन्जल (इन्द्राइन) जैसी है कि खुशबू भी नहीं मजा भी खराब। (बुखारी व मुस्लिम)

रश्क के काबिल :

५४५. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया रश्क सिर्फ दो लोगों पर मुनासिब है रश्क उस शख्स पर आए जिस को अल्लाह तआला ने कलाम पाक का इल्म अता फरमाया वह उस पर दिन रात अमल करता है दूसरा वह जिस को अल्लाह तआला ने माल व दौलत दी और वह अपनी दौलत को रात दिन अच्छे तरीके पर खर्च करता है। (बुखारी मुस्लिम)

अल्लाह तआ़ला ने हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से फ़रमाया कि: आप कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह को चाहते हो तो तुम मेरी पैरवी करो अल्लाह तुम को चाहने लगेगा। (३:३१)

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

जुमा सप्ताह की ईद और मुसलमानों के यहां इस ईद का आयोजन

शुक्रवार की जुह्र की नमाज़ के बजाए जुमा की विशिष्ट नमाज़ होती है। समय इसका वही है जो जुह्र का है। इसमें एक ओर तो यह कमी कर दी गई है कि चार रकअत फ़र्ज़ के बजाय दो रकअत होती हैं, दूसरी ओर यह अभिवृद्धि है कि नमाज़ के पहले खुत्बा होता है और नमाज़ जेहरी होती है अर्थात् सूर–ए–फ़ातिहा तथा सूरा हर रकअत में इमाम उच्च स्वर से पढ़ता है। शुक्रवार मुसलमानों के यहाँ बड़ा शुभ एवं पवित्र दिन है, और वह एक प्रकार से साप्ताहिक ईद है। इस दिन विशेष रूप से स्नान करना और उजले तथा अच्छे वस्त्र धारण करना सुन्नत है। उचित यह समझा गया है कि अधिक से अधिक मुसलमान एक स्थान पर नमाज़ पढ़ें, अतः हर बड़े नगर में एक ऐसी बड़ी मस्जिद का रिवाज पहले से चला आ रहा है, जिसको "जामा मस्जिद" कहते हैं, जैसे–दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की जामा मस्जिद आदि। मुसलमान नहा धोकर और अगर बीमारी, समय की कमी या किसी और कारणवश ऐसा न हो सका तो यथासम्भव साफ़ सुथरे ढंग से मस्जिद में पहुँच जाते हैं और दो रकअत या चार रकअत सुन्नत पढ़कर नमाज़ (फ़र्ज़) की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं।

जुमे का खुत्बा

हर ऐसी मस्जिद में जहाँ जुमा होता है (और अब बड़े नगरों में अधिकांश मस्जिदों में होता है) मिम्बर मौजूद होता है, जब खतीब उस पर पहुंच जाता है तो एक दूसरी अज़ान पहली पंक्ति में खड़े होकर या कुछ पीछे हट कर दी जाती है जिस के वही शब्द होते हैं जो इसके पूर्व वर्णन किये जा चुके हैं। फिर खतीब खड़े होकर खुत्बा पढ़ता है। इस खुत्बे का मूलाधार अथवा लक्ष्य तो यह था कि खतीब इस अवसर पर एक संक्षिप्त भाषण दे जिस में धर्म के मूल सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं को प्रस्तुत करे और समय तथा परिस्थिति से सम्बन्धित कोई आवश्यक बात या कोई सामूहिक सन्देश है तो उचित एवं संक्षिप्त रूप से मुसलमानों तक पहुंचा दे, यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीका था। आप का खुत्ब–ए–जुमा शक्तिपूर्ण, प्रभावात्मक, जीवन से भरपूर और संतुलित आकार का होता था अब भी अनेक इस्लामी देशों में इसके अनुसरण का प्रयास किया जाता है और हर जुमा का नया खुत्बा होता है। लेकिन भारतवर्ष तथा बहुत से अजमी देशों में, जिनकी भाषा अरबी नहीं है, इस पद्धति को कठिन समझकर अब किसी छपी हुई पुस्तक से खुत्बा पढ़ दिया जाता है या इमामों को कंठस्थ होता है, इसके बाद खतीब कुछ क्षणों के लिए बैठ जाता है, फिर दूसरा खुत्बा देता है। कुछ स्थानों पर खुत्बे वाली अज़ान से पहले स्थानीय तथा लोक भाषाओं में नमाजियों से खिताब करने तथा भाषण देने का रिवाज प्रचलित हो गया है।

एक अरबी खुत्बे का अनुवाद

यहां नमूने के तौर पर एक अरबी 'खुत्बे' का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है, जो हिन्दुस्तान में अधिक मान्य तथा प्रचलित है, और अधिकांश बड़े बड़े आलिम इसी को (किताब में देखकर या मौखिक रूप से) पढ़ते है:–

अल्लाह के गुण गान तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम के बाद, "लोगो तौहीद (एकेश्वरवाद) को अंगीकार करो (अल्लाह को अपने अस्तित्व एवं गुणों में एक समझो और किसी को भी उसका साझी न बनाओ) इसलिये कि तौहीद खुदा का सबसे बड़ा आज्ञापालन तथा सबसे उत्तम कर्म है, प्रत्येक कार्य में अल्लाह से शर्म व लिहाज करो, इसलिये कि यह शर्म व लिहाज की प्रवृत्ति समस्त भलाइयों की जड़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आचार व्यवहार (सुन्नत) को सुदृढ़तापूर्वक पकड़ो, इसलिये कि सुन्नत, अनुसरण तथा आदेश पालन की ओर मार्ग दर्शन करती है, और जो अल्लाह और उसके रसूल का आदेश पालन करेगा, वह सीधे मार्ग पर अग्रसर, और अभीष्ट लक्ष्य का पाने वाला होगा। दीन (धर्म) में जो नई बात

(बिद आत) निकाली गई है, उनसे सदैव दूर रहना, इस लिये कि इसका परिणाम खुदा की अवज्ञा एवं मार्ग भ्रष्टता है। अपने समस्त जीवन में सत्य का पालन करो, इसलिये कि सत्य में कल्याण तथा असत्य में बरबादी है। उपकार एवं शुभ व्यवहार को अपने जीवन का नियम बनाओ, इसलिये कि अल्लाह को उपकार करने वाले प्रिय हैं। अल्लाह की रहमत (दया अनुकम्पा) से कभी निराश न हो, इसलिये कि वह समस्त दया करने वालों में सबसे अधिक दया करने वाला है। दुनिया पर रीझ मत जाना कि सब कुछ खो बैठो, देखो ! किसी को उस समय तम मौत नहीं आ सकती जब तक कि उसकी नियत जीविका न प्राप्त हो जाय। अतः खुदा की अवज्ञा और वैध–अवैध, उचित अनुचित साधनों द्वारा जीवकोपार्जन का प्रयास व्यर्थ है। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु साधन भी अच्छे ग्रहण करो। अपने समस्त कार्यों में खुदा पर भरोसा रखो, इसलिए कि उसको अपने ऊपर भरोसा करने वालों का बड़ा ध्यान है। दुआ में कमी न करो, इसलिये कि खुदा सबकी सुनता और सब की झोली भरता है। उससे अपने पापों तथा अपराधों के प्रति क्षमा याचना करते रहो और इस्तिगफार करते रहो, इससे तुम्हारे माल एवं परिवार में अभिवृद्धि होगी।

अल्लाह तआला कुरान मजीद में फरमाता है।

तुम्हारे रब (पालने वाले) ने कह दिया है कि मुझ से मांगो मैं कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से अहंकारवश कनियाते हैं, जल्द ही वह अपमानित होकर, 'जहन्नम में प्रवेश करेंगे। (अल मूमिन–६०)

अल्लाह हमको और तुमकों कुरआन की दौलत में से अधिक से अधिक हिस्सा प्रदान करें, और हमको और तुमकों उसकी आयतों तथा उसके ज्ञान पूर्ण उपदेशों से लाभ पहुंचाए। मैं अपने लिये, तूम्हारे लिये और समस्त मुसलमानों के लिए खुदा से क्षमा याचना करता हूं, तुम भी उससे क्षमा की भीख मांगो, वह बहुत दयावान तथा क्षमा प्रदान करने वाला है।

दूसरे खुत्बे के अंश

दूसरे खुत्बे का एक महत्वपूर्ण अंग सलात व सलाम, चारों खुलफाए–राशिदान, अहलबैत–किराम के लिए क्षमादान तथा पदोन्नति हेतु दुआ और तमाम मुसलमानों के लिए, संसार के लिए अच्छाई, भलाई तथा कामयाबी के लिए दुआ है। सामान्यतः इस खुत्बे का अन्त कुरआन मजीद की इस आयत पर किया जाता है।

निस्सन्देह अल्लाह न्याय, उपकार तथा नातेदारों को (उनका हक़) देने का आदेश देता है और अशलील कर्म तथा बुराई और जुल्म व जियादती से मना करता है। वह तुम्हें सदोपदेश देता है ताकि तुम ध्यान दो।

(सूरा–अन्नहल १३/६०)

नमाज़ जुमा तथा उसके बाद सामान्य व्यवसायिक व्यस्तता

खुत्बे के बाद इमाम मिम्बर से उतर कर महराब में खड़ा हो जाता है और उसी प्रकार नमाज़ आरम्भ करता है जैसे उपयुर्क्त वर्णन किया जा चुका है। नमाज़ समाप्त होने के बाद लोग दो या चार सुन्नतें वहीं मस्जिद में या घर में पढ़कर अपने व्यावसायिक धन्धों में व्यस्त हो जाते हैं और खुदा की भी यही इच्छा कुरआन मजीद में बयान की गई है कि इसके बाद व्यर्थ समय नष्ट करना अथवा बेकार रहना उचित नहीं, लोग व्यापार, खेती बाड़ी और अन्य सांस्कृतिक, आर्थिक तथा ज्ञानात्मक कार्यों में व्यस्त हो सकते हैं और जीवन सम्बन्धी कार्य क्रमों को सुचारू तथा सामान्य रूप से धारण कर लेना चाहिए।

रात्रि के पिछले पहर तहज्जुद की नमाज़

दोनों ईदों की नमाजों का वर्णन मुसलमानों के त्यौहार से सम्बन्धित भाग में किया जा चुका है। तरावीह की नमाज़ क़ा उल्लेख रोजों के सिलसिले में आयेगा।

फ़र्ज़ नमाजों के बाद (नफली नमाजों में से) तहज्जुद की नमाज़ का बड़ा महत्व है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी ऐसी पाबन्दी की और कुरआन मजीद में इसके सम्बन्ध में ऐसे प्ररेणात्मक शब्दों में वर्णन किया गया है कि उसके आधार पर विद्वानों के एक वर्ग का ऐसा विचार हो गया है कि वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए फ़र्ज़ (अनिवार्य) थी। अब भी बहुत से वास्तविक अर्थों में कहे जाने वाले मुसलमान तहज्जुद पढ़ने के बड़े पाबन्द हैं और कदाचित दूसरे इस्लामी देशों में कुछ अधिक ही। हिन्दुस्तान में पिछली रात को उठने वाले और रूचि एवं उल्लास के साथ तहज्जुद की आठ या बारह रकअतें पढ़ने वाले मिलेंगे। यह नमाज़ दो, दो रकअत करके पढ़ी जाती है इसमें किरअत लम्बी होती है। इसकी अवधि अर्ध रात्र के बाद सुब्ह सादिक उदय होने तक है।

किस्त तीन

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

हुस्ने मुआमलः (उत्तम बरताव)

अगरचे ग़ायत फैय्याज़ी अत्यधिक उदारता की वजह से अक्सर मक़रूज़ रहते थे, यहां तक कि वफात के वक़्त भी आप सल्ल० की जिरह (कवच) मन भर गल्ला पर एक यहूदी के यहां गिरवी थी, लेकिन हर हाल में उत्तम बरताव फ़रमाते थे। मदीना में दौलतमन्द यहूदी थी और अक्स उन्हीं से आप कर्ज़ लिया करते थे। यहूदी आमतौर से सख्तगीर (कठोर) होते थे। आप उन की हर तरह की बदमिज़ाजियाँ (चिड़चिड़ापन) सहन करते थे।

नबूवत से पहले जिन लोगों से आप के व्यापारिक सम्बन्ध थे उन्हों ने हमेशा आप की ईमानदारी और उत्तम बरताव को स्वीकार किया है। इसीलिए कुरैश ने एक राय होकर आप को अमीन का ख़िताब दिया था। नबूवत के बाद भी गो कुरैश बुग़ज़ व कीनः (ईर्ष्या व द्वेष) के जोश से लबरेज़ (भर) थे ताहम उन की दौलत के लिए मामून मकाम आप ही का काशना था (आप ही के घर वह अपनी दौलत को महफूज़ पाते थे)। अरब में सायब (रजि०) नाम के एक ताजिर थे, वह मुसलमान होकर आप के पास हाजिर हुए। लोगों ने प्रशंसा करते हुए आप से उनका परिचय कराया। आप ने फ़रमाया, " मैं इनको तुम से ज्यादा जानता हूँ।" साय़ब (रजि०) ने कहा, मेरे माँ बाप फ़िदा आप मेरे साझी थे, लेकिन हमेशा मुआमलः साफ रखा। (अबूदाऊद)

एक बार कुछ खजूरें एक शख्स से कर्ज़ के तौर पर लीं। चन्द रोज के बाद वह तकाज़ः को आया। आप ने एक अन्सारी को हुक्म दिया कि उसका कर्जा अदा कर दें। और अन्सारी ने खजूरें दी। लेकिन वैसी उमदः नहीं थीं। उसने लेने से इन्कार किया। अन्सारी ने कहा तुम अल्लाह के रसूल की दी हुई खजूर लेने से इन्कार करते हो। बोला हाँ अल्लाह के रसूल इन्साफ न करेंगे तो किस से आशा की जाये। आप सल्ल० ने यह सुना तो आप की आंखों में आंसू भर आये, और फरमाया कि यह बिल्कुल सच है। (मसनद अहमद)

एक दिन एक बद्दू आया जिसका कुछ कर्ज़ आप पर था बद्द आम तौर से वहशी मिज़ाज होते है उसने ज़ोर ज़ोर बोलना शुरू किया। सहाबः ने इस गुस्ताखी पर उसको डांटा और कहा कि तुझको खबर है कि तू किस से बात कर रहा है? बोला कि मैं तो अपना हक़ मांग रहा हूं। आप ने सहाबः से इरशाद फ़रमाया कि तुम लोगों को इसी का साथ देना चाहिए क्योंकि इसका हक़ है। (कर्ज़ ख्वाह को बोलने का हक़ है) इसके बाद सहाबः को उसका कर्ज़ अदा कर देने का हुक्म दिया और ज्यादा दिलवाया। (इब्नमाज्जः)

एक गज़वः में हज़रत जाबिर रजि० बिन अब्दुल्ला अन्सारी साथ थे। उनकी सवारी में जो ऊंट था वह चलने में सुस्त था। और थक जाने की वजह से और भी सुस्त हो गया था। आप ने ऊंट उनसे खरीद लिया। और दाम के साथ ऊंट भी उनको दे दिया कि दोनों तुम्हारे हैं। (बुखारी)

यही घटना एक रिवायत में इस तरह है कि आप सल्ल० ने उनसे फरमाया तुम्हारे पास कोई लकड़ी हो तो दो। उन्होंने दी, आप ने उस से ऊंट को मारा तो वह इतना तेज दौड़ने लगा। कि सबसे आगे निकल गया। फिर आप ने उनसे चार दीनार पर ऊंट इस शर्त पर खरीद लिया कि मदीना तक उनका सवारी का हक़ है। मदीना पहुंच कर जाबिर रजि० ने कीमत तलब की। आप ने बिलाल रजि० से फरमाया कि इनको कीमत चार दीनार और इससे कुछ और ज्यादा भी दो। अतः हज़रत बिलाल रजि० ने चार दीनार पर एक कीरात (कैरट) सोना और ज्यादा दिया। (बुखारी)

मामूल था कि कोई जनाज़ा लाया जाता तो पहले फरमाते थे मय्यत पर कोई कर्ज़ तो नहीं है अगर मालूम होता कि कर्ज़दार था तो सहाबः से फरमाते कि जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा दो, खुद शरीक न होते। (बुखारी)

एक दफ़ा किसी व्यक्ति ने एक प्याला उधार लिया। इत्तेफाक़ ऐसा कि वह गुम हो गया तो उसका तावान अदा फरमा दिया। (तिरमिज़ी)

एक दफ़ा किसी से ऊंट कर्ज़ लिया। जब वापस किया तो उस से

बेहतर ऊंट वापस किया और फ़रमाया सबसे बेहतर वह लोग हैं जो कर्ज़ को खुश मुआमलगी से अदा करते हैं। (तिरमिज़ी)

अक्सर फ़रमाया करते थे कि मैं तीन दिन से ज्यादा अपने पास एक दीनार भी रखना पसन्द नहीं करता उस दीनार के अलावा जिसे कर्ज़ अदा करने के इन्तेजार में अपने पास रख छोड़ता हूँ। (बुखारी)

एक दफ़ा एक बद्दू ऊंट का गोश्त बेच रहा था। आप सल्ल० को यह ख्याल था कि घर में छुहारे मौजूद हैं। आप ने एक वसक़ (साठ सआ वज़न का और एक सआ २३४ तोले का होता था) छुहारों पर गोश्त चुका लिया। घर में आकर देखा तो छुहारे न थे। बाहर आकर गोश्त वाले से कहा कि मैंने छुहारों पर गोश्त चुकाया था लेकिन छुहारे मेरे पास नहीं हैं। उस ने वावयला मचाया कि हाय बददियनती लोगों ने समझाया कि अल्लाह के रसूल बददियानती करेंगे? आपने फरमाया नहीं छोड़ दो। उसको कहने का हक़ है फिर गोश्त वाले से वही बात कही। उसने फिर वही लफज़ कहे। लोगों ने फिर रोका। आप ने फरमाया इसको कहने दो। इसको कहने का हक़ है। और यह वाक्य (जुमला) कई बार दुहराते रहे। इसके बाद आपने एक अन्सारियः के यहां उसको भेजवाया कि अपने दाम के छुहारे वहां से लेले। जब वह छुहारे लेकर पलटा तो आप सहाबः के साथ बैठे थे उसका दिल आप के दरगुजर से प्रभावित था, देखने के साथ बोला, मुहम्मद! तुम को खुदा ज़जा–ए–ख़ैर दे, तुमने कीमत पूरी पूरी दी और अच्छी दी। (मसनद इब्नहँबल)

एक बार मदीना से बाहर एक छोटा सा काफ़िला आकर ठहरा। एक सुर्ख़ रंग का ऊंट उसके पास था। इत्तेफ़ाक़न उधर से आप का गुज़र हुआ। आप ने ऊंट की कीमत पूछी। लोगों ने क़ीमत बताई। बे मोल तोल किये आप ने वही कीमत मंजूर कर ली ऊंट की महार पकड़कर शहर की तरफ चल पड़े। बाद को लोगों को ख्याल आया कि बेजान पहचान हमने जानवर क्यों हवाले कर दिया और इस हिमाक़त पर अब पूरे क़ाफिले को नदामत (पछतावा) थी। काफिला के साथ एक महिला भी थी। उसने कहा धीरज रखिये हमने किसी व्यक्ति का चेहरा ऐसा रौशन नहीं देखा, अर्थात् ऐसा व्यक्ति दग़ा (छल) नहीं करेगा। रात हुई तो आप ने उन के लिए खाना और कीमत भर खजूरें भेजवा दीं। (दारे कुत्नी)

गज़व–ए–हुनैन में आप को कुछ असलहः की ज़रूरत थी, सफ़वान उस वक्त तक काफिर थे, उनके पास बहुत सी ज़िरहे (कवच) थीं, आपने उन से कुछ जिरहें तलब कीं। उन्होंने कहा मुहम्मद! क्या कुछ हड़पने का इरादा है। फ़रमाया 'नहीं' मैं थोड़ी देर के लिए मांगता हूं। अगर इन में से कोई तलफ़ (नष्ट) हुई तो मैं ताबान दूंगा। अतएव उन्होंने चालीस जिरहें मुसलमानों को मंगनी दी। हुनैन से वापसी के बाद जब असलहा और दीगर सामान का ज़ायज़ा लिया गया तो कुछ ज़िरहें कम निकलीं। आप ने सफ़वान से कहा तुम्हारी कुछ ज़िरहें कम हैं उनका मुआवजः (क्षति पूर्ति) ले लो। सफ़वान ने अर्ज़ किया ऐ! अल्लाह के रसूल मेरे दिल की हालत पहले जैसी नहीं, अर्थात् मुसलमान हो गया अब मुआवजः की हाजत (जरूरत) नहीं। (अबूदाउद)

अदल व इन्साफ (न्याय)

कोई व्यक्ति गोशः नशीन (एकान्त वास) होकर बैठ जाये तो उसके लिए अदल व इन्साफ से काम लेना बड़ा आसान है। आँ हज़रत सल्ल० को अरब के सैकड़ों कबीलों से काम पड़ता था। यह आपस में एक एक के दुश्मन थे। एक के पक्ष में फैसला किया जाता तो दूसरा दुश्मन बन जाता। इस्लाम के प्रसार की गर्ज़ से हमेशा आप को तालीफ़े कुलूब (लोगों के मन अपनी ओर इस प्रकार आकर्षित करना जिस में श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव हो) से काम लेना पड़ता। इन सब के बावजूद इन्साफ का पलड़ा कभी किसी तरफ झुकने न पाता।

फ़तेह मक्का के बाद पूरे अरब में सिर्फ़ ताइफ़ रह गया था जिसने हार नहीं मानी। आप ने उस पर घेरा डाला, लेकिन पन्द्रह बीस दिन के बाद घेरा उठा लेना पड़ा। सख़र एक रईस थे उनको यह हाल मालूम हुआ तो खुद जाकर ताइफ की घेराबन्दी की और नगरवासियों को इतना दबाया कि वह अन्ततः समझौता पर राजी हो गये। सखर ने आप को खबर दी। मुगीरः बिन शअबः सक़फ़ी आप सल्ल० की खिदमत में आये कि सखर ने मेरी फूफी को कब्जः में कर रखा है। आपने सखर को बुला भेजा। और हुक्म दिया कि मुगीरः की फूफी को उनके घर पहुंचा दो। इसके बाद बनू सलीम आये कि जिस ज़माने में हम काफिर थे सखर ने हमारे सोता पर कब्जा कर लिया था अब हम इस्लाम लाये हमारा चश्मः (सोता) हमको वापस दिला दें आप ने सखर को बुला भेजा और

फरमाया कि जब कोई कौम इस्लाम कुबूल करती है तो अपने जान व माल की मालिक हो जाती है इस लिए इनको इनका चश्मः दे दो। सखर को मंजूर करना पड़ा। रावी का बयान है कि जब आप के हुक्म से सखर ने दोनों हुक्म मंजूर किये तो मैं ने देखा कि आप सल्ल० के चेहरे पर शर्म से सुर्खी आगई कि सखर को दोनों मुआमलों में शिकस्त हुई और ताइफ़ फ़तेह करने का उन को कोई बदला न मिला। (अबूदाउद)

एक दफ़ा एक औरत ने जो खानदाने मखजूम से थी चोरी की कुरैश की इज्जत के लिहाज से लोग चाहते थे कि सजा से बच जाये और मुआमला दब जाये। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रजि० आप सल्ल० के खास प्रिय थे लोगों ने उन से कहा कि आप सिफारिश कीजिये। उन्होंने आप से मुआफ़ी की दरख्वास्त की। आप ने गज़ब आलूद (कोपयुक्त) होकर फरमाया कि बनी इस्राइल इसी की बदौलत तबाह हुए कि वह ग़रीबों पर हद जारी करते थे अमीरों से दरगुजर करते थे। (अबूदाउद)

खैबर के यहूदियों से जब सुलह होकर वहां की जमीन मुजाहिदीन में तकसीम कर दी तो अब्दुल्ला बिन सहल एक दफा खजूरों की बटाई के लिए गये, महीसः उनके चचेरे भाई साथ थे, अब्दुल्ला गली में जा रहे थे कि किसी ने उनको क़त्ल करके लाश एक गढ्ढे मे डाल दी। महीसः ने अल्लाह के रसूल के पास जाकर इस्तेग़ास (वाद दायर करना) किया। आप ने फरमाया तुम कसम खा सकते हो कि यहूदियों ने इनको कत्ल किया बोले मैंने अपनी आंख से नहीं देखा। आपने फरमाया, तो यहूद से हलफ़ लिया जाये। बोले, हज़रत! यहूदियों की कसम का ऐतबार क्या, यह सौ दफ़ा झूठी कसम खालेंगे। खैबर में यहूद के अलावा और कोई कौम आबाद न थी यह यकीनी था कि यहूदियों ही ने अब्दुल्ला बिन सहल को कत्ल किया है ताइफ चूंकि कोई ऐनी शहादत मौजूद न थी आप ने यहूद से तअर्रुज़ (विरोध) नहीं फरमाया और खून बहा के सौ ऊंट बैतुलमाल (राजकोष) से दिलवाये। (बुख़ारी)

तारिफ़ महारबी का बयान है कि जब इस्लाम अरब में फैलना शुरू हुआ तो हम कुछ आदमी रब्जः से निकले और मदीना को चले। शहर के करीब पहुंचकर मकाम किया। ज़नानी सवारी भी साथ थी। हम सब बैठे हुए थे कि एक साहिब सफेद कपड़े पहने हुए आये। और सलाम किया। हम ने सलाम का जवाब दिया। हमारे साथ सुर्ख़ रंग का ऊंट था, उस की क़ीमत पूछी। हमने जवाब दिया इतनी खजूरें। उन्होंने कुछ मोल तोल नहीं किया और वही क़ीमत मंजूर कर ली, फिर ऊंट की महार पकड़कर शहर की तरफ बढ़े। नजरों से ओझल हो गये तो ख्याल आया कि दाम रह गये। हम लोग उनको पहचानते नहीं लोगों ने एक दूसरे को मुल्जिम ठहराना शुरू किया। डोली में बैठी महिला ने कहा इतमीनान रखो। हमने किसी का चेहरा इस कदर चौदहवीं रात के चांद की तरह रोशन नहीं देखा (अर्थात् ऐसा व्यक्ति धोखा न करेगा)। रात हुई तो एक शख्स आया कि अल्लाह के रसूल ने तुम्हारे लिए खाना और खजूरें भेजी हैं। दूसरे दिन सुबह को हम लोग मदीना में आये। आप सल्ल० मस्जिद में खुत्बा (प्रवचन) दे रहे थे। हम लोगों को देखकर एक अन्सारी ने उठकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! यह लोग बनू सअल्बः के कबीले के हैं और इनके मूरिस (पूर्वज) ने हमारे खानदान के एक शख्स को क़त्ल कर दिया था, इसके बदले में इन का एक आदमी कत्ल करा दीजिये। आप ने फरमाया, बाप का बदला बेटे से नहीं लिया जा सकता। (दारे कुत्नी)

सर्क़ रजि० एक सहाबी थे। उन्होंने एक बदवी से एक ऊंट मोल लिया लेकिन क़ीमत न अदा हो सकी। बद्दू उनको पकड़कर आप सल्ल० के पास ले गया। और घटना बयान की। आप ने हुक्म दिया कि कीमत अदा कर दो। उन्होंने नादारी (निर्धनता) का उज्र किया (अर्थात् न दे सकने की बात कही) आप ने बद्दू से कहा कि बाजार ले जाकर इनको बेच लो। बद्दू उनको बाजार में ले गया। एक साहिब ने दाम देकर बद्दू से खरीदा और आजाद कर दिया। (दारे कुत्नी)

अबू हदरद सलमी रजि० एक सहाबी थे जिन पर एक यहूदी का कर्ज आता था और उन के पास बदन पर जो कपड़े थे उनके अलावा कुछ न था। यह वह ज़माना था जब आप सल्ल० खैबर का इरादा कर रहे थे। अबू हदरद रजि० ने यहूदी से कुद मुहलत तलब की, लेकिन वह न माना और उनको पकड़कर आप सल्ल० के पास लाया। आप ने फरमाया कि इनका कर्ज़ अदा कर दो। उन्हों ने न दे सकने की बात कही। आप ने फिर फरमाया, उन्होंने फिर वही जवाब दिया और अर्ज़ किया कि ऐ! अल्लाह के रसूल गज़ब–ए–ख़ैबर करीब है शायद वहां से वापसी पर कुछ हाथ आये तो

मैं इसको अदा कर दूंगा। आप ने फिर यही हुक्म दिया कि फौरन अदा कर दो। आखिर अपना तहबन्द उस यहूदी को कर्ज में नज्र किया और सर से जो पगड़ी बन्धी थी उसको खोलकर कमर से लपेट लिया। (मुसनद अहमद)

इस अदल व इन्साफ का यह असर था कि मुसलमान एक तरफ़, यहूद भी जो आप के शदीद तरीन दुश्मन थे, अपने मुकदमात आप ही की बारगाहे अदालत में लाते थे। और उनकी शरीअ़त के मुताबिक उसका फैसला होता था। अतएव कुर्आन मजीद में इस घटना का सराहत के साथ जिक्र है। इस्लाम से पहले बनू नुज़ैर और बनू कुरैज़ के यहूदियों में इज्जत व शराफत की अजीब व गरीब हद कायम थी। कोई कुरैजी अगर किसी नुजैर को कत्ल करता तो किसास (खून के बदले में खून) में वह मारा जाता, लेकिन अगर कोई कुरैज़ी नुज़ के हाथ से मारा जाता तो उसके खून की कीमत सौ ऊंट जितना छुहारा ले जा सकें उतना छुहारा देना होता। इस्लाम में जब यह घटना घटी तो कुरैज़ ने आप सल्ल० के सामने मुकदमा पेश किया। आप ने फ़ौरन तौरात के मुताबिक दोनों कबीलों में बराबर का क़िसास जारी कर दिया। (अबूदाउद)

अदल व इन्साफ का सबसे नाजुक पहलू यह है कि खुद अपने मुकाबले में भी हक़ का रिश्ता छूटने न पाये। एक बार आप माले गनीमत तकसीम फरमा रहे थे। लोगों की भीड़ लगी थी। एक शख्स आकर मुंह के बल आप पर लद गया। आ के पवित्र हाथ में पतली सी लकड़ी थी। आप ने उस से उस को ठोका दिया, इत्तेफाक से लकड़ी का सिरा उसके मुंह में लग गया और खराश आ गई। फरमाया मुझ से बदला ले लो। उसने अर्ज़ किया ऐ! अल्लाह के रसूल मैंने मुआफ़ कर दिया। (अबूदाउद) मर्जुलमौत में आप ने मज़म–ए–आम में एलान किया, अगर मेरे ज़िम्मे किसी का कर्ज़ आता हो, अगर मैंने किसी की जान व माल या आबरू को सदमा (दुख) पहुंचाया हो तो मेरी जान व माल व *आबरू हाजिर* है। इसी दुनिया में वह बदला चुका ले। मजमा में सन्नाटा था। सिर्फ एक शख्स ने चन्द दिरहम का दावा किया जो दिलवा दिये गये। (इब्नेइसहाक़)

(जारी)

प्रस्तुति तथा रूपान्तरकार मो० हसन अंसारी

अव्यवस्थाओं के वास्तविक कारण

"यदि विश्व के नैतिक इतिहास का निष्पक्ष गहन अध्ययन किया जाये और बदनज़्मियों, बे उ़नवानियों और नागरिक जीवन की कठिनाइयों के वास्तविक कारण तलाश किये जायें तो उनकी तह में जायज़ इन्सानी इच्छाओं और वास्तविक आवश्यकताओं का हाथ कम मिलेगा। इनकी तह में सामान्यतः नाजायज़ इच्छायें और फ़र्ज़ी ज़रूरतें निकलेंगी।

इन्हीं नाजायज़ इच्छाओं और फ़र्ज़ी ज़रूरतों ने हर ज़माने में शहरी ज़िन्दगी में नई नई उलझनों और हर शासन–व्यवस्था के लिए नई नई कठिनाइयों को जन्म दिया है। इन्हीं फर्ज़ी ज़रूरतों ने लोगों को अत्याचार, अनाचार, बेईमानी, ग़बन बलात, शोषण, रिश्वतख़ोरी, धोखाधड़ी पर आमादा किया। और इन के असर से पूरे–पूरे मुल्क और बड़ी बड़ी हुकूमतें "अंधेर नगरी चौपट राज" बन कर रह गयीं।"

(अ़ली मियां)

प्रस्तुति : हसन अंसारी

पांचवी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़माना

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

गज़व–ए–हुनैन

अभी आप मक्के में ही थे कि मालूम हुआ कि सक़ीफ़ और हवाजिन के क़बीले फसाद पर तुले हुए हैं। सूचना मिलते ही तुरंत उधर रवाना हुए। हुनैन के स्थान पर मुकाबला हुआ। मुसलमानों के पास उस समय बारह हजार फौज थी। सामान काफी और अच्छा था। लोगों के दिल में विचार आया जब हमने चन्द आदमियों से बड़ी बड़ी फौजों को भगा दिया तो इतनी ताक़त के बाद अब कौन है जो हमारा सामना कर सके। अल्लाज तआला को यह घमण्ड पसन्द न आया और पहले ही हमले में पैर उखड़ गये। केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और चन्द खास खास सहाबा (रजि०) मैदान में रह गये। यह दशा देखकर हज़रत अब्बास को आदेश हुआ कि मुसलमानों को आवाज़ दें। आवाज का कान में पड़ना था कि सब के सब पलट पड़े। अब क्या था दम के दम में मैदान का रंग बदल गया और थोड़ी देर में दुश्मन साफ हो गए। जंग समाप्त हुई तो छः हजार कैदी, चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार बकरियां और चार हज़ार औकीया चान्दी कदमों के पास ढेर थी। हुनैन के प्राजित मुशरिक भाग कर ताएफ के किले में इकट्ठा हुए और लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। इसलिए रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुनैन से ताएफ़ तशरीफ ले गए और थोड़े दिन किले का घेराव कर लौट आए।

गज़व–ए–तुबूक स० ६ हि०

तुबूक मदीना और दमिश्क के बीच शाम में एक स्थान है० ६ हि० में मदीना में बहुत ही ज़ोर शोर से खबर फैली कि रूमी बड़े साज़ो सामान से मदीना पर चढ़ाई की तैयारी कर रहे हैं। सख़म व जज़ाम अरब क़बीले भी उन के साथ हैं। चूंकि मुसलमानों और शामियों में जंग छिड़ चुकी थी अतः इस खबर को सही समझने में कोई सन्देह नहीं हुआ और रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयारी का हुक्म दे दिया। संयोग से इस वर्ष अरब में सख्त सूखा पड़ा हुआ था। गर्मी बड़े गजब की पड़ रही थी इसलिए लोगों का निकलना बहुत ही कष्ट दायिक था। मुनाफिकों को औसर मिल गया। उन्होंने खुफिया तौर पर मुसलमानों को रोकना शुरू कर दिया। मुसलमान यूंही गरीब थे। सूखे ने और हालत खराब कर दी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम अरब के क़बीलों से चन्दे की मांग की। धनी सहाबा (रजि०) ने बड़ी बड़ी रकमें पेश की। हज़रत उसमान (रजि०) ने तीन सौ ऊंटों से मदद की फिर भी बहुत से सहाबा ग़रीबी की वजह से शरीक न हो सके। क़ुर्आन ने उनकी मजबूरी के कारण उन्हें जिहाद में भाग न लेने की छूट देदी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अली को मदीना में अपना नाईब (प्रतिनिधि) बना कर तीस हजार सहाबा को लेकर मदीने से शाम रवाना हो गए। तुबूक पहुंच कर मालूम हुआ कि रूमियों के हमले की सूचना सही न थी लेकिन बिल्कुल ग़लत भी न थी। एक ग़सानी सरदार अरबों से साज़ बाज़ कर रहा था। आँ हज़रत (सल्ल०) बीस दिन वहां ठहरे उसी बीच ईला के रईस यूहन्ना और जरबा और अज़रः के ईसाईयों ने आंहज़रत (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित होकर ज़जिया देना स्वीकार कर लिया। दोमतुलजन्दल का अरब सरदार कैदरकैसर का मातहत था, आंहजरत (सल्ल०) ने हज़रत ख़ालिद (रजि०) को उसकी गिरफ्तारी के लिए भेजा। उन्होंने जाकर उस को बन्दी बना लिया। फिर आं हज़रत की सेवा में हाजिरी देने की शर्त पर रिहा कर दिया चुंकि तुबूक में रूमियों की तैयारी की कोई सूचना न मिली इसलिए बीस दिन ठरहने के बाद आंहज़रत (सल्ल०) वापस तशरीफ़ लाए।

अंतिम हज़

फतहे मक्का के बाद इस्लाम की राह से बड़ी रूकावटें दूर हो गईं और कुछ दिनों में अरब के कोने कोने में इस्लाम का प्रकाश फल गया।

स० १० हिजरी में हुजूर (सल्ल०) ने हज का इरादा किया जिस को हज्जतुल विदा अर्थात विदाई का हज कहते हैं क्योंकि यह आप का अन्तिम हज था। जब यह खबर मशहूर हुई तो हर तरफ से लोग निकल पड़े और

थोड़े दिनों में एक लाख से ऊपर आदमी इकट्ठा हो गए। हज के बाद आप ने अपना मशहूर खुतबा (अभिभाषण) दिया आपने फरमायाः—

"लोगो ! ग़ौर से सुनो और याद रखो शायद फिर तुम से मिलना का औसर न मिले जिस प्रकार यह दिन, इस महीने और इस जगह का सम्मान करते हो उसी प्रकार एक मुसलमान का खून और आबरू दूसरे मुसलमान पर हराम है। अल्लाह तआला तुम्हारे हर काम का हिसाब लेगा। देखो मेरे बाद भटक न जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। जिस प्रकार तुम्हारा अधिकार औरतों पर है उसी प्रकार औरतों का अधिकार तुम्हारे ऊपर है। उन के साथ नर्मी करना और मेहरबानी से पेश आना और अल्लाह से डरकर उन के हक़ का ख़्याल रखना। गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करना। जो खुद खाना उन्हें खिलाना जो खुद पहनना वही उनको पहनाना। उनसे कोई गलती हो तो क्षमा कर देना या उन्हें अलग कर देना। वह भी अल्लाह ही के बन्दे हैं सख़्ती ठीक नहीं"

न अरबी को अजमी (गैर अरबी) पर बड़ाई है न अजमी को अरबी पर। सब मुसलमान आपस में भाई भाई हैं। तुम्हारे लिए किसी की चीज़ उस समय तक हलाल नहीं जब तक कि वह खुशी से न देदे।

"देखो अन्याय न करना। मैं तुम्हारे पास ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूं जिस को तुम मज़बूती से पकड़े रहोगे तो कभी राह नहीं भटकोगे, वह चीज़ कुर्आन है।"

अमल में खुलूस (निःस्वार्थता) मुसलमान भाइयों की भलाई चाहना और जमाआत (समुदाय) में एकता आपसी मेल मिलाप यह तीन बातें ऐसी हैं जो दिल को पाक रखती हैं।

खुतबा खत्म हुआ तो आप ने लोगों से पूछा कि कियामत के दिन तुम से पूछा जाएगा कि मैं ने खुदा के आदेशों को तुम तक पहुंचाया या नहीं तो तुम क्या जवाब दोगे। लोगों ने एक ज़बान होकर कहा हम गवाह हैं कि आपने अल्लाह के आदेश को हम तक पहुंचा दिये और अपना फर्ज अदा कर दिया। यह सुनकर आपने आसमान की तरफ उंगली उठाई और तीन बार फरमाया, ऐ अल्लाह तुम गवाह रह, ऐ अल्लाह तुम गवाह रह, ऐ अल्लाह तुम गवाह रह। इसके बाद आप मदीना तशरीफ लाए।

आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वर्गवास

हज्जतुल विदा (आखिरी हज) के मौक़े पर कुर्आन मजीद की आखिरी आयत उतर चुकी थी अनुवादः— आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हार दीन पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) तमाम कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसन्द किया जिस से संकेत मिल गया कि अब हुजूर (सल्ल०) को दुनिया में रहने की ज़रूरत बाक़ी नहीं है क्योंकि आप जिस काम के लिए तशरीफ़ लाए थे उनको पूरा कर चुके। चुनानचि दो महीने बाद सफ़र की आखिरी तारीखों में आप को बुख़ार आया और दिन पर दिन बढ़ता ही गया। आखिर ६३ वर्ष की उम्र में सोमवार के दिन १२ रबीऔवल (बारहवफ़ात) की पहली तारीख को आप का स्वर्गवास हो गया।

जैसे ही देहान्त की ख़बर फैली सारे मदीने में कुहराम मच गया। बड़े बड़े मजबूत दिल के लोग बदहवास हो गए। हज़रत अली (रज़ि०) जहां थे वहीं बैठ गए।

हज़रत उसमान (रज़ि०) को सकता हो गया हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस (रज़ि०) का मारे सदमें से देहांत हो गया। हज़रत उमर को पहले यकीन ही न आता था जब यकीन आया तो बेहोश होकर गिर पड़े। लोगों को जब जरा सुकून हुआ तो कफ़न दफ़न का इन्तिजाम हुआ और मंगल के दिन रबीऔवल की दूसरी तारीख को वहीं हज़रत आयशा के हुजरे (कोठरी) में दफ़न हुए। स्वर्गवास के समय आप (सल्ल०) की उम्र ६३ वर्ष की थी।

इस्लाम का प्रभाव

शरू में पढ़ चुके हो कि हुजूर (सल्ल०) से पहले अरब बल्कि सारी दुन्या की क्या हालत थी। २३ वर्ष की मुद्दत कोई ऐसी मुद्दत है लेकिन इन्हीं चन्द वर्षों में सारे अरब की काया पलट हो गई। अब वहां चोर थे न उठाईगीरे, न कहीं डाका पड़ता था न कोई क़ाफ़ला लुटता था। हर तरफ़ खुदा के पाक व मुखलिस (निःस्वार्थ) बन्दे थे। एक सिरे से दूसरे सिरे तक देश में शान्ति थी। एक बूढ़ी औरत यमन के शहर सनआ़ से सोना उछालती चलती थी और सैकड़ों मील का सफर तय करके मक्का पहुंचती थी और कोई रोक टोक करने वाला न था। गनीमत का माल (युद्ध में प्राप्त धन) आता और कई कई दिन मस्जिद में बिना चौकी पहरे के पड़ा रहता था लेकिन लेना तो बड़ी बात है कोई आंख उठाकर भी न देखता कि सोने का ढेर है या मिट्टी का। कहीं तो दुश्मनी का यह हाल था कि भाई

भाई के खून का प्यासा था या यकायक यह हालत हो गई कि ग़ैर सम्बन्धियों से बढ़ गए और पराए अपने हो गए। नफ़रत के बजाए मुहब्बत का चर्चा था। शराब जो उनकी घुट्टी में पड़ी थी एक दम बन्द हो गई। जुआ जो उनका रात दिन का खेल था बिल्कुल समाप्त हो गया। बुराई और बदकारी के अड्डे उजड़ गए। मेले ठेलों का ख़ात्मा हो गया। बुत मिट गए। बुत खानों में सन्नाटा छा गया। अब न कहीं पेड़ों की पूजा थी, पत्थरों की, न क़बरों पर सज्दे होते थे और न सरदारों और बादशाहों के आगे सर झकते थे। हर तरफ़ एक ही खुदा का ज़िक्र (जाप) था और उसी के नाम की पुकार।

ईमान की शक्ति ने साहस बढ़ाया। वही निर्धन लाचार अरब जिनकी सारी जिन्दगी चरवाही और ऊंटों की देखभाल में गुजरी थी, बादशाहत व सल्तनत के इरादे करने लगे। जो क़ैसर व कसरा (रूम व ईरान) के बादशाहों के नाम से कांपने लगते थे और ग़सानियों के ख्याल से जिनकी नींदें उचाट हो जाती थीं, अब वहीं आगे बढ़ कर उनके सिंघासन पर कदम रख देना चाहते थे। जहां हर तरफ गरीबी और निर्धनता थी, ऊंटनियों और खजूरों से पेट पालते थे, चार चार दिन बाद भी अन्न का दर्शन नहीं होता था, थोड़े ही दिनों में वहां इतनी दौलत फट पड़ी कि हजारों रूपये लेकर लोग निकलते थे लेकिन कोई लेने वाला न मिलता था।

सोचने वाली बात है आखिर चन्द वर्षों में यह काया पलट क्यों कर हो गई मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा और वह कौन सी हस्ती थी जिसने सारी दुन्या बदल दी। (जारी)

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

(पृष्ठ ४ का शेष)

सिर्फ़ अल्लाह को माबूद और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उसका रसूल मानने वाले और फिर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात में अपनी पूरी ज़िन्दगी ढाल लेने वाले को अपना दीनी भाई न समझना बड़ी ही महरूमी की बात है। इस तरह की गुफ़्तगू से मैं अपने कई अज़ीज़ों को एअतिदाल पर ला चुका हूं।

अल्हम्दुलिल्लाह मुझे बराबर ऐसी जगहों पर गुफ़्तगू का मौक़अ मिलता रहता है जहां इख़्तिलाफ़ात का ज़ोर है। जो हज़रात मेरी बात सुनते हैं उनसे कहता हूं कि अगर एक ग़ैर मुस्लिम ईमान लाना चाहे तो उससे आप क्या कहलवा कर इस्लाम में दाख़िल करेंगे जवाब मिलता है कि कल्मा पढ़ाकर। फिर मैं सुवाल करता हूं कि इसके बाद आप उसे ईमान व इस्लाम की तल्क़ीन किस तरह करेंगे कि अब वह क्या क्या माने और क्या क्या करे? फिर उन के जवाब से पहले ही मैं उनको बहुत सादे तौर पर हदीसे जिब्रील का मफ़हूम सुनाता हूं और मुतालबा करता हूं कि किसी के ईमान व इस्लाम की जांच इसी हदीसे जिब्रील की रौशनी में होना चाहिए न कि न समझ में आने वाली बातों से। अल्हम्दुलिल्लाह मैं इसमें कामयाब हूं और सच्चा राही पढ़ने वालों को मश्वरा देता हूं कि अगर वह मुझ से इत्तिफ़ाक़ करें तो इस नुस्खे को आज़माएं और उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ पैदा करने का सवाब कमाएं।

(पृष्ठ १६ का शेष)

उत्तरः तलाक़ वाली औरत की इद्दत तीन बार हैज़ (माहवारी) आना है, हमल (गर्भ) हो तो बच्चा पैदा हो जाने या हमल गिर जाने तक इद्दत है। जिस औरत को माहवारी न आती हो उसकी इद्दत तीन महीना है।

तुझे फ़ज्ल करते नहीं लगती बार

ख़ैरुन्निसां बेहतर

है क्या देर ऐ मेरे परवरदिगार
तुझे फ़ज़्ल करते नहीं लगती बार
हो मेरी तरफ़ भी निगाहे करम
न कर अपने साइल को तू बेक़रार
तू कहता है मांगो में दूंगा ज़रूर
है बन्दों से तेरा यह क़ौलोक़रार
तेरे क़ौल पर मैं हूं साबित क़दम
तेरे दर पे हाज़िर हूं लैलो नहार
तेरी शाने रहमत से यह है बईद
कि आकर तेरे दर पे हूं शर्मसार
तू कर अपना वअ़दा वफ़ा या समद
हों मुझ पर तेरी बख़्शिशें बे शुमार
कि जिस की मैं मुद्दत से हूं मुंतज़िर
वह क़ुदरत की अपनी दिखा अब बहार
करम कर ख़ुदाया न अब देर कर
है बेहतर खड़ी कब से उम्मीदवार
आज वह अरज़ी जो दी दरबार में होये क़बूल
मुद्दआ जो है मेरा वह आज हो जाये हुसूल
आज भर दे दामने उम्मीद मेरा या करीम
दूर हो जाये जो कुछ दिल में हो मेरे ख़ौफ़ो बीम
क़ौल हो पूरा तेरा मक़्सद ये बर आये मेरा
है कलामे पाक में लातक़्नतू तू ने कहा

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : एक ईसाई इस्लाम से मुतअस्सिर (प्रभावित) हुआ उसकी बीवी पढ़ी लिखी थी उसने अपनी बीवी से अपना हाल बता कर कहा, मैं तो इस्लाम लाना चाहता हूं। बीवी कहा मैं भी आप के साथ इस्लाम में दाख़िल होना चाहती हूं। फिर दोनों एक साथ, सिर्फ़ अल्लाह के माबूद होने और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के अल्लाह के रसूल होने का इक़रार व एअ़लान करके इस्लाम में दाख़िल हो गये तो क्या अब उन के लिये ज़रूरी है कि वह इस्लामी तरीक़े पर अपना निकाह पढ़ाएं? और क्या ज़रूरी है कि मर्द का ख़त्ना हो?

उत्तर : ईसाई हो या कोई और ग़ैर मुस्लिम इस्लाम लाने से पहले अगर उन्होंने अपने मज़हब और रस्म व रिवाज के मुताबिक़ मियां बीवी बने हों तो इस्लाम ने उस रिश्ते को उनके लिये माना है। लिहाज़ा अगर वह दोनों एक साथ इस्लाम लाए हैं तो उनको अब निकाह की ज़रूरत नहीं है इस्लाम उनको मियां बीवी मानता है। अलबत्ता अगर काफ़ी आगे पीछे ईमान लाए हैं तो अब निकाह करने के बाद ही वह मियां बीवी की तरह रह सकेंगे। और अगर इस्लाम लाने से पहले शादी किये बिना दोस्ताना तौर पर मियां बीवी बने हुए थे और अब दोनों इस्लाम ले आए हैं तो भी निकाह पढ़ाना पड़ेगा। अगर किसी ग़ैर मुस्लिम ने किसी ऐसी औ़रत से शादी कर रखी थी जो इस्लाम में नाजाइज़ है जैसे दूध शरीक बहन वगैरह,तो इस्लाम लाने के बाद उनमें अलाहिदगी करवा दी जायेगी। न उनका निकाह बाकी रहेगा। न ही नये सिरे से उनका आपस में निकाह हो सकता है। बड़ी उ़म्र में कोई इस्लाम लाया तो अब उस के लिए ख़त्ना करना ज़रूरी नहीं है। ख़त्ना कराना सुन्नत है जबकि बालिग़ मर्द के लिए ग़ैर के सामने शर्मगाहों का सत्र फर्ज़ है।

प्रश्न : किसी बच्चे या बच्ची ने अपनी मां के अ़लावा किसी और औ़रत का दूध पी लिया तो इसका क्या हुक्म है?

उत्तर : जिस बच्चे या बच्ची ने अपनी मां के अ़लावा किसी औ़रत का दूध पी लिया तो वह दूध पिलाने वाली औ़रत और उसका शौहर दूध पीने वाले बच्चे या बच्ची के मां बाप के हुक्म हो गये और उस दूध पिलाने वाली औ़रत की औलाद इस बच्चे या बच्ची के भाई बहन जैसे हो गये। दूध के यह रिश्ते सिर्फ़ निकाह को हराम करेंगे, वारिस नहीं बनाएंगे।

अहनाफ़ के नज़दीक दूध के रिश्ते जब ही काइम होंगे जब बच्ची या बच्चे ने दूध पीने की मुद्दत में पिया हो यानी ढाई साल के अन्दर अगर किसी बच्चे ने अपनी उ़म्र के ढाई साल के बाद किसी औ़रत का दूध पिया तो अहनाफ़ के नज़दीक उस से दूध का रिश्ता काइम न होगा।

प्रश्न : बिलड बैंक की तरह बाज़ जगह मिल्क बैंक भी है। उसमें जिन औ़रतों की छाती में ज़ाइद दूध होता है वह ग़रीब बच्चों के लिये बैंक में जमा कर देती है इसका इस्लामी हुक्म क्या है?

उत्तर : इस्लामी नुक्त–ए–नज़र से यह नाजाईज़ है। इसलिये कि जो बच्चा या बच्ची यह दूध पियेगा वह दूध के रिश्ते से बनने वाले मां बाप, ख़ाला, फूफी और भाई बहनों से ना वाक़िफ़ होगा जिससे हराम निकाह हो सकता है। लिहाज़ा मुसलमानों को औ़रतों के मिल्क बैंक से पूरी तरह बचना चाहिए।

प्रश्न : क्या औ़रत के लिये सर के बालों का भी परदा है? बहुत सी औ़रतें तो दुपट्टा ही नहीं ओढ़ती और बहुत सी औ़रतें दुपट्टा तो ओढ़ती हैं मगर आधा या चौथाई या बालों का कुछ हिस्सा खुला रहता है तो क्या वह गुनहगार होती है?

उत्तर : औ़रतों के बालों का परदा है, मुसलमान औ़रतों पर लाज़िम है कि वह नामहरमों के सामने सर के पूरे बाल ढकें, एक बाल भी दिखाई न दे। सर के बालों का कुल या कुछ नामहरमों के सामने खोलना बड़े गुनाह की बात है।

प्रश्न : एक शख़्स ने अपनी बीवी को एक तलाक़ दी, फिर इद्दत के अन्दर रूजूअ़ न किया अब शौहर उसी औ़रत से निकाह करना चाहता है ऐसी सूरत में क्या औ़रत पर लाज़िम है कि उसी शौहर से निकाह करे या उस को इख़्तियार है कि वह किसी और से निकाह कर सकती है?

उत्तर : एक तलाक़ के बाद इद्दत के अन्दर शौहर बिना निकाह के रूजूअ़ करके अपनी बीवी बना सकता था लेकिन इद्दत के बाद अब दोनों की रज़ामन्दी ज़रूरी है अच्छा तो यही था कि औ़रत अपने पहले शौहर से निकाह कर ले लेकिन अगर उसे पसन्द नहीं है तो दूसरे शख़्स से निकाह कर सकती है।

प्रश्न: इद्दत की मुद्दत क्या है?

(शेष पृष्ठ १५ पर)

शरीअत तथा साम्प्रदायिकता

डा. मसऊद आलम क़ासमीर

मुस्लिम फार सेकुलर डेमोक्रेसी के नाम से बम्बई के कुछ लोगों ने एक संगठन बनाया है। बम्बई और गुजरात के दंगों से, जिस में मुसलमानों का क़त्ल आम किया गया था, प्रभावित होकर इस संगठन ने सम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष की शुरूआत की है। यद्यपि यह संगठन एक छोटे से गुरूप के रूप में है परन्तु मीडिया और सरकारी क्षेत्रों में तवज्जुह के क़ाबिल बना हुआ है। इस संगठन के केन्द्री ज़िम्मेदारों ने मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ का दौरा किया। विद्यार्थियों के अतिरिक्त स्टाफ क्लब को भी सम्बोधित किया। अपने संगठन और अपने उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला। इन नुमाइंदो ने फासिस्ट शक्तियों के इन तरीकों पर भी प्रकाश डाला जो देश के सेकुलर आचरण और सम्प्रदायिक एकता के लिए चैलेंज है और उनका मुकाबला करने की अपील की। यह एक उचित मांग थी जिसका यूनिवर्सिटी के अध्यापकों ने सकरात्मक और उत्साहजनक (मुस्बत और हिम्मत अफ़ज़ा) जवाब दिया। मगर केवल फ़ासिस्टताक़तों की आलोचना करके अपने को सेकुलर साबित करना कठिन होता है। इसलिए उनमें से चन्द एक साहिबान ने मुसलमानों पर तीर चलाकर सेकुलर होने का सुबूत पेश किया।

अगर केवल मुसलमानों के सुधार की ही बात और उनके आचरण की ही आलोचना की गई होती तो शायद यूनिवर्सिटी के अध्यापक ख़ामोश रहते मगर इन लोगों ने मुसलमानों के संस्थाओं (इदारों) सिद्धान्तों, उलमा, संगठनों, जिम्मेदारों और खास तौर पर मुस्लिम परसनल–लॉ को भी आलोचना का निशाना बनाया और जिस अप्रिय शैली में निशाना बनाया उसकी प्रतिक्रिया होना जरूरी था। स्टाफ एसोशिसन के अध्यक्ष प्रोफेसर कैसर नकवी ने फैसला किया कि मेहमान वक्ताओं ने (मुकर्रिरीन) मजहब और मुस्लिम परसनल–लॉ पर जो प्रश्न उठाए हैं उस पर डा० मुहम्मद सऊद आलम कासमी अपना विचार प्रकठ करेंगे। लेखक ने केवल उन सवालों का जवाब दिया जो मुसलमानों के मजहब और शरीअत (धर्मशास्त्र) से सम्बन्धित है। नीचे संक्षिप्त उत्तर प्रस्तुत हैं।

इस से अन्दाजा किया जा सकता है कि मुसलमानों के लिए आंतरिक (दाखिली) और बाह्य (खारजी) चैलेंज क्या है और उसका किस प्रकार सामना किया जा सकता है।

मेहमान वक्ताओं से गुज़ारिश की गई है कि उनका सम्प्रदायिकता से लड़ने का इरादा नेक है और हम सब आप के साथ हैं लेकिन सेकुलरइज़्म के आंदोलन के साथ मुस्लिम परसनल लॉ की मुखालिफ़त करना उचित नहीं है। यह दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं क्योंकि सेकुलर भारती संविधान **(Cnonstitution of India)** के अंतर्गत ही मुस्लिम परसनल लॉ को मंजूरी मिली है।

दूसरी बात यह है कि शरीअत के किसी मसअले पर बोलने के लिए आवश्यक योग्यता और जानकारी जरूरी है। यह बड़ा नाजुक मामला है, केवल चलता हुआ रिमार्क कर देना काफी नहीं। हर मसअले पर अच्छी तरह बात चीत होनी चाहिए और दोनो पक्षों को अपने तर्क (दलीलें) रखने चाहिए फिर उन तर्कों की मजबूती और कमजोरी की बुनियाद पर राए कायम करनी चाहिए और फैसला करना चाहिए। उचित होगा मुस्लिम परसनल लॉ बोर्ड के जिम्मेदारों से जानकारी प्राप्त कर ली जाए।

तीसरी बात यह है कि इन विषयों पर मुसलमानों को सम्बोधित (मुखातिब) करते समय लबोलेहजा (मम्बोधन शैली) माकूल और उचित होनी चाहिए नहीं तो आप के अन्दोल से सहयोग मुसलमान नहीं कर सकेंगे। अगर अपनी बात नर्मदिली से न करेंगे तो सुन्ने के लिए मुसलमान मौजूद नहीं होंगे।

चौथी बात यह है कि हिन्दुस्तान में बैलेंस करने का ग़ैर मुंसिफाना (अन्यायी) तरीक़ा प्रचलित है। ज़ालिम के साथ मज़लूम (जिस पर जुलम किया गया हो) को भी सज़ा दी जाती है। सेकुलर इज्म़ के लिए इंसाफ़ ज़रूरी है और इंसाफ़ का तक़ाज़ा है कि ज़ालिम को ज़ालिम कहा जाए और मज़लूम को मज़लूम, ज़ालिम और मज़लूम को एक सफ़ (पंक्ति) में न खड़ा किया जाए।

आखिरी बात यह है कि मुस्लिम

परसनल लॉ बोर्ड की स्थापना कुर्आन की उस आयत की रोशनी में की गई है जिसमें कहा गया है "हम ने आप को एक खास शरीअत पर क़ायम कर दिया, आप उसी तरीके पर चलते रहिये और उन लोगों की इच्छाओं की पैरवी न कीजिये जो शरीअत को नहीं जानते।" (सूरतुल–जसियः– १८)

कुर्आन व हदीस में जो साफ साफ आदेश मुसलमानों को दिया गया है, वह कभी तब्दील नहीं होगा, अलबत्ता जो आदेश जिनमें एक से अधिक राय की गंजाइश है उन पर ग़ौर हो सकता है मगर ग़ौर वह लोग करेंगे जो इसके योग्य हैं न की वह लोग जो शरीअत के उसूलों के जानकार नहीं हैं।

अब उन प्रश्नों के जवाब पेश हैं जो संगठन के जिम्मेदारों ने उठाए थे–

प्रश्नः जब एलेक्शन का ज़माना आता है तो संघ परिवार यकसां सिविल कोड का मामला उठाता है मुसलमान उसकी मुखालफ़त करते हैं। संघ परिवार इसका लाभ उठाकर हिन्दू वोट को इकट्ठा करता है तो क्यों न मुसलमान खुद ही प्रस्ताव करें कि पार्लियामेन्ट में हुक्मरां पार्टी और उसका साथ देने वाली पार्टियां यकसां सिविल कोड का बिल पेश करें, हम ग़ौर करेंगे?

उत्तरः यकसां सिविल कोड अमल के क़ाबिल नहीं है जस्टिस अहमदी ने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि ब्रादराने वतन (देश के ग़ैर मुस्लिम भाई) में इलाकाई क्षेत्र और क़ाबाइली (आदिवासी) सतह पर जो भिन्नता है, उस की खुद सरकार अनदेखी नहीं कर सकती, जहां तक मुसलमानों का मामला है वह इसे कुबूल नहीं कर सकते कि यह कुर्आन के विरूद्ध है। कुर्आन कहता है कि मुसलमान की शादी केवल मुसलमान से होगी। सिविल कोडका का मतलब यह है कि मुसलमान की शादी ग़ैर मुस्लिम से भी हो जाएगी। अगर सिविल कोड के अनुसार मसुलमान किसी ग़ैर मुस्लिम से शादी करले तो यह शादी हराम होगी। मुसलमान यह दाग़ अपने सीने पर नहीं लगा सकता। अगर यकसां सिविल कोड पेश किया जाए और यह मंजूर हो जाए तो मुसलमान इख़लाक़ी तौर पर मजबूर होंगे कि उसे कुबूल करें और उसकी हिमायत करें। यह ईमान के खिलाफ़ है और बुद्धिमानी के विरूद्ध है।

प्रश्नः मुस्लिम परसनल लॉ अंग्रेजों के ज़माने में १९३६ ई० में बनाया गया है। १९३६ से पहले मुसलमान उस पर अमल नहीं करते थे तो क्या वह मुसलमान नहीं थे?

उत्तरः मुसलमान जहां भी हैं इस्लाम के कानूनों पर अमल करना उनका फर्ज़ है और उनकी पहचान है। मुसलमान १९३६ ई से पहले भी इस्लामी कानूनों पर अमल करते थे। हां मुस्लिम हुकूमतों के समाप्ति के कारण इस्लाम के फ़ौजदारी ताज़ीरी (दण्डात्मक) कवानीन खत्म हो गए जो बचा वह दीवानी हिस्सा था। जिस में हुकूमत से टकराव नहीं था और ग़ैर मुसलमानों के साथ रहते हुए बाज़ ग़ैर इस्लामी रिवाज दाखिल हो गए। इसलिए मुसलमानों और खास तौर से मुस्लिम महिलाओं ने मांग की कि अदालतों में हमारे मामलात इस्लामी क़ानून के अनुसार तय किये जाएं और इस तरह मुस्लिम परसनल लॉ मंजूर हुआ।

प्रश्नः कशमीर में मुसलमान अक्सरीयत (बहुसंख्यक) में है, वहां मुस्लिम परसनल लॉ नहीं है जो मुसलमान हिन्दुस्तान छोड़कर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस चला जाता है वहां मुस्लिम परसनल लॉ पर अमल नहीं करता तो क्या वह लोग मुसलमान नहीं हैं?

उत्तरः मुसलमान जिस जगह या जिस देश में है, वह इस्लाम के कानून पर अमल करने का पाबन्द है जहां तक उसके बस में है। कशमीर के मुसलमान मुस्लिम परसनल लॉ पर ही अमल करते हैं। क्या मुसलमानों की शादियां ग़ैर मुस्लिमों में होती हैं क्या तलाक हिन्दू तरीके पर दी जाती है? अगर नहीं तो यह तय है कि वह मुस्लिम परसनल लॉ पर अमल करते हैं। मुस्लिम परसनल लॉ इस्लाम का आइली कानून है जिस के दाइरे में निकाह, तलाक, रज़ाअत (दूसरे के बच्चे को दूध पिलाना) विरासत, वसीयत, हिबा और वक्फ़ जैसे मसाएल आते हैं जबकि मुस्लिम परसनल लॉ बोर्ड इन समस्यों के शरअी कानूनों की हिफ़ाजत के लिए १९७२ ई० में कायम की गयी एक संस्था है जिस पर हिन्दुस्तान के मुसलमानों की सहमत है। कशमीर में बोर्ड नहीं है। मुस्लिम परसनल लॉ है। अगर किसी देश में यह क़ानून न हों तब भी जहां तक सम्भव हो मुसलमानों को इस्लामी शरीअत पर अमल करना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करते तो अवश्य गुनहगार हैं।

प्रश्नः मुस्लिम परसनल लॉ कुर्आन के अनुसार नहीं है इसकी मिसाल यह है कि कुर्आन ने लड़कियों को विरासत में हिस्सा दिया है जबकि हुकूमत ने खेती की ज़मीन और बागों की विरासत से उन को वंचित कर दिया है तो उलमा

ने उसकी हिमायत की?

उत्तर: यह गलत फ़हमी और जानकारी न होना है। उस समय तो मुस्लिम परसनल लॉ बोर्ड की तो स्थापना ही नहीं हुई थी। बोर्ड का क़याम १९७२ ई० में हुआ जबकि हुकूमत ने यह कानून १९५० ई० के आस पास बनाया उस समय भी उलमा ने विरोध किया था, और अब भी कर रहे हैं। सुबूत यह है कि १९६५ ई० में फिकह (शरअीकानून) अकेडेमी का इजलास इसी यूनिवर्सिटी में हुआ था। उस अधिवेशन में देश के ढाई सौ उलमा शरीक हए थे। उन सब ने एक प्रस्ताव मंजूर किया जिस में हुकूमत से मांग की गई कि वह मुसलमान औरतों को विरासत में कुर्आन में प्रदान किया हुआ हिस्सा स्वीकार करे।

प्रश्न: मुस्लिम परसनल लॉ में तब्दीली की ज़रूरत है। तीन तलाक़ और नफका (भ्रणपोषण) के कानून से औरतों के हक़ का हनन्न होता है। तलाक़ दी हुई औरतों के नफ़क़ा बिल पास होने के बावजूद साढ़े चार हजार मुकदमे बम्बई की अदालत में चल रहे हैं।

उत्तर: मुसलमानों को अपने व्यवहार में तब्दीली लाने की जरूरत है और मुस्लिम जनता को इस्लामी कवानीन (कानूनों) से परचित कराने की आवश्यकता है न कि शरीअत में बदलाव की। चारों फुकहा (धर्म शास्त्र विशेषज्ञ) के यहां एक समय में दी गई तीन तलाके तीन ही होती है। यह नई समस्या नहीं है अलब्तता यह तलाक़ का तरीक़ा मूर्खतापूर्ण और अनुचित है।

इस पर हज़रत उमर (रजि०) ने सजा़ का प्राविधान रखा था। हमें कोई आपत्ति नहीं है कि इस तरह तलाक़ देने वाले को उचित सजा़ दी जाए। जहां तक नफ़क़ा (भ्रणपोषण) का सम्बन्ध है, वह कुर्आन की व्याख्या है उसको बदलने का अधिकार उलमा को नहीं है।

प्रश्न: मेरे पास अट्ठारह मुस्लिम देशों के परसनल लॉ पर लिखी हुई पुस्तक है। हर जगह ज़रूरत के अनुसार तब्दीली कर ली गई है मगर हिन्दुस्तान के उलमा तैयार नहीं हैं।

उत्तर: मुस्लिम देश हमारे लिए मिसाल (आदर्श) और मार्गदर्शक नहीं है। हमारा मार्गदर्शन कुर्आन, सुन्नत और फुक़हा (धर्मशास्त्र विशेषज्ञ) करते हैं। तब्दीली का सम्बन्ध उन मामिलों से न हो जिनका आदेश कुर्आन व हदीस में हो तो उलमा गौर करेंगे जिन मामिलों का आदेश कुर्आन व हदीस में मौजूद है, उनमें तब्दीली का हक उलमा को नहीं है।

प्रश्न: कमसिन लड़कियों की शादी पर हर जगह पाबन्दी लगी हुई है मगर मुस्लिम परसनल लॉ बोर्ड इस को मना करता है।

उत्तर: यह शरअी मसला नहीं है। पालिसी मैटर है। इस्लाम ने निकाह के लिए उम्र की क़ैद (प्रतिबन्ध) नहीं रखी है ताकि निकाह आसान और ज़िना (व्यभिचार) मुश्किल हो जाए लेकिन अगर कमसिनी की शादी को प्रोत्साहित न करने में सामाजिक भलाई हो तो उस पर ग़ौर किया जा सकता है। इसे इस्लाम का मसला बना कर न पेश किया जाए।

प्रश्न: हिन्दुओं में सुधार का आन्दोलन चलता है मगर मुसलमानों में क्यों नही चलता, क्या मुसलमानों में खराबी नहीं है?

उत्तर: हम स्वीकार करते हैं कि मुसलमानों में बहुत सी खराबियां पैदा हो गई हैं। उलम की तकरीरें (भाषण) समाज सुधार के जलसे और दीनी जमातें इन खराबियों के सुधार के लिए प्रयत्नशील हैं। जिनके हाथ में कलम और सुधार की चिन्ता है उनकों भी सुधार की फिक्र करनी चाहिए मगर याद रहे खराबी हमारे अन्दर हे न कि हमारी शरीअ़त में। सुधार हमारा होना चाहिए न कि हमारे मज़हब का। सुधार के लाभप्रद और हमदर्दाना मश्वरे के लिए उम्मत के दरवाजे खुले रहेंगे और मुस्लिम परसनल लॉ बोर्ड खुद तहरीक चला रहा है।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

ज्ञान का प्रसार और उलमा का महत्व

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

इस्लाम ने हर प्रकार के लाभकारी ज्ञान की प्राप्ति को बड़ा महत्व दिया है और इसके लिए बड़ा प्रोत्साहन तथा सरपरस्ती की। अल्लाह ने पहले दिन से ही पढ़ने पढ़ाने का कुरआन पाक में उल्लेख करके इसकी आवश्कता और महत्व को कियामत तक के लिए अमर बना दिया।

'पढ़ो (ऐ नबी सल्ल०) अपने पालनहार के नाम के साथ, जिसने पैदा किया इंसान को जमे हुए रक्त के एक लोथड़े से, पढ़ो और तुम्हारा स्वामी बड़ा दयावान है जिसने कलम के द्वारा ज्ञान सिखाया, इंसान को वह ज्ञान दिया जिसे वह जानता न था।' (सूरतुल्अ़लक)

और पढ़े लिखे लोगों को अनपढ़ लोगों पर प्रमुखता दी, इस बारे में इर्शाद है

'कह दीजिये (ऐ नबी सल्ल०) क्या न जानने वाले जानने वालों को बराबर हो सकते हैं।' (३६:६)

और आगे बतायाः

'तुम मे से अल्लाह ईमान वालों को श्रेष्ठता प्रदान करता है और उन लोगों को जिन्हें ज्ञान दिया गया है कुछ और दर्जे प्रदान किए गए हैं।''

उलमा (विद्वानों) की विशेषता बताते हुए कहा गयाः

''अल्लाह तआला से उसके बन्दों में उलमा ही डरते है''(३५:२८)

इस्लामी तन्त्र ने शिक्षा के प्रचार प्रसार और प्रोत्साहन के व्यावहारिक नमूने प्रस्तुत करके सदैव के लिए एक अच्छी व सच्ची परम्परा स्थापित कर दी। जंग बदर और उसकी स्थिति पर विचार कीजिये। मुसलमान मदीना मुनव्वरा हिजरत करने के बाद भी अमन चैन के साथ न रह सके। इसी के साथ सख्त आर्थिक संकट का शिकार भी हुए। अल्लाह ने जंग बदर में नबी अकरम सल्ल० को महान विजय प्रदान की। मुश्रिकों के ७० सैनिक युद्ध बन्दी बने। उनकी रिहाई के लिए तीन हज़ार से चार हज़ार दिरहम तक फिदया (जुर्माना) निर्धारित हुआ। मगर जो लोग लिखना पढ़ना जानते थे उनका फिदया दस मुसलमानों को लिखना पढ़ना सिखा देना निर्धारित किया गया कि जब ये बच्चे लिख पढ़ लें तो वे आजाद हो जाएंगे।

इल्म प्राप्त करने के लिए हर प्रकार के साधन जुटाए गए। अवसर उपलब्ध कराए गए और कहा गया कि ज्ञान सीखो यद्यपि यह चीन में प्राप्ति हो सके। ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) है और फरमायाः 'जो आदमी ज्ञान प्राप्ती के लिए घर से निकला वह उस समय तक अल्लाह के रास्ते में है जब तक घर वापस न आ जाए।'

क्योंकि ज्ञान से ही इंसान इस लोक और परलोक के मामलों को जानता और समझता है, अतः ज्ञान के प्रचार व प्रसार का काम बहुत बड़े पुण्य का साधन और अमर सदका है, जिसका प्रोपकार बराबर मिलता रहेगा। मुसलमानों ने नबी सल्ल० के समय से लेकर आज तक इल्म हासिल करने और सिखाने के लिए अच्छे से अच्छे प्रबन्ध किए। सत्य के मार्ग में जिहाद के लिए निकले तो दुनिया के जिस कोने और जिस देश में पहुंचे, नमाज के लिए मस्जिद और मस्जिद में कुर्आन मजीद और जरूरी मसले सिखाने के लिए मकतब व मदरसे स्थापित किए।

छात्रों का आदर किया जाता, उनको प्रोत्साहित किया जाता और उनके साथ हर तरह से सहयोग किया जाता। मुस्लिम समाज में उलमा का बड़ा मान सम्मान था और उनसे सदैव मार्ग–दर्शन प्राप्त किया गया। जब भी उन्हें या उनकी रहनुमाई की अवहेलना की गयी तो परेशानियों और मुश्किलों का सामना करना पड़ा। चारों खलीफ़ा और सहाबा किराम रजि० का सुनहरा दौर तो इल्म और उलमा के महत्व और सम्मान के नमूनों से मालामाल है ही, मगर उसके बाद भी मुसलमान शासकों, बादशाहों और आम मुसलमानों ने इस मैदान में बड़े व्यवहारिक नमूने छोड़े है। उमवी ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ विद्वानों का बड़ा आदर सम्मान करते थे। अपने पास बिठाते और दूर तक उनको विदा करने जाया करते थे।

अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफर मन्सूर, इमाम मालिक की सेवा में हाजिर हुए और उनसे मश्विरा मांगा और

दुआओं की दर्खावास्त की। उनकी बहुमूल्य पुस्तक 'मुवत्ता' को राज्य के कानून के रूप में लागू करने की अनुमति मांगी, परन्तु इमाम मालिक ने यह सोच कर रोक दिया कि मुसलमान समुदाय को एक मसलक पर पाबन्द नहीं करना चाहिए। एक बार एक बड़े विद्वान, मुहद्दिस और बुजुर्ग हज़रत सुफियान सूरी अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद के मेहमान हुए। ख़लीफ़ा ने एकाग्र होकर उनकी सेवा की, खाना खिलाया, वजू के लिए पानी गर्म करते और स्वयं वजू कराते जब वे जाने लगे तो शहर बग़दाद से निकल कर उनको विदा किया और अपने लिए उनसे दुआ की विनती की।

इस संदर्भ में भारत–पाक उपमहद्वीप में मुस्लिम शासन काल की भी एक घटना पढ़ लीजिएः काज़ी शहाबुद्दीन दौलताबादी (८४६ हि०–१४४५ ई०) अपने समय के एक प्रसिद्ध व लोक प्रिय विद्वान हुए हैं। ऐसी लोकप्रियता और प्रसिद्धि उनके समय के किसी दूसरे विद्वान को हासिल नहीं हुई। इनका असली वतन तो अफ़गानिस्तान का शहर गज़नी था, मगर उन्होंने दौलताबाद (औरंगाबाद के पास) में अपना बचपन गुज़ारा। दिल्ली के प्रमुख विद्वानों काज़ी अब्दुल मुक़्तदिर ने उस होनहार और नेक छात्र से बड़ा स्नेह था। वे कहा करते थे कि मेरे यहां एक छात्र आया है जिसकी खाल भी ज्ञान है और दिमाग भी ज्ञान है और हड्डियां भी ज्ञान हैं।

अमीर तैमूर ने जब दिल्ली पर हमला किया तो इतना बड़ा हंगामा हुआ कि जीवन बसर करना कठिन हो गया, अतएव जौनपुर के बादशाह इब्राहीम शाह शरक़ी की दरखवास्त पर मौलाना शहाबुद्दीन जौनपुर चले गए। बादशाह ने उनका स्वागत किया और सलतनत का चीफ़ जस्टिटस नियुक्त कर दिया। इस पद के कर्तव्य पूरे करने के साथ साथ लिखने लिखाने का काम भी करते रहे। मौलाना शहाबुद्दीन दौलताबादी उस दौर के प्रसिद्ध बुजुर्ग हज़रत अशरफ़ जहांगीर समनानी रहम० के मुरीद और उनसे आध्यात्मिक दीक्षा ली।

हज़रत समनानी भी उनसे बड़ा लगावा रखते थे और उनको अपनी खिलाफत (आध्यात्मिक उत्तराधारी) के साथ मलिकुल–उलमा (विद्वानों के राजा) की उपाधि से सुशोभित किया। सुलतान शरक़ी भी हज़रत अशरफ़ समनानी रहम० से बड़ी श्रद्धा रखते थे। एक बार क़ाज़ी शहाबुद्दीन हज़रत अशरफ़ जहांगीर समनानी रहम० की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि सुलतान इब्राहीम आपकी सेवा में उपस्थित होना चाहते हैं। हज़रत अशरफ़ समनानी रहम० ने फरमायाः ' इस तुच्छ की निगाह में तुम सुलतान से बहुत अच्छे हो वे आते हैं तो आने दो वे शासक हैं;' जब क़ाज़ी शहाबुद्दीन को विदा किया तो फरमायाः हिन्दुस्तान में क़ाज़ी शहाबुद्दीन जैसा श्रेष्ठता और गुणों वाला इंसान कम ही देखा गया है। सुलतान इब्राहीम शरक़ी काज़ी शहाबुद्दीन का बड़ा प्रशंसक और गुण ज्ञाता और उनके ज्ञान एवं बुद्धि का प्रशंसक था और उनसे बड़ी मोहब्बत करता था। वे जब बीमार हुए तो दुआ की, ऐ खुदा! जो बला क़ाज़ी साहब पर आयी है वह मुझ पर भेज दे और इनको स्वस्थ कर दे।''

ज्ञान व शिक्षा का प्रसारः–

शिक्षा के प्रचार व प्रसार और मदरसों व दर्सगाहों की स्थापना का काम उमवी और अब्बासी खिलाफ़त के बाद भी रूचि, गति और उत्साह के साथ चलता रहा यद्यपि चौथी और पांचवी सदी हिजरी में राजनीतिक दृष्टि से मुसलमान हुकूमतें कमजोर और उखाड़–पछाड़ का शिकार हो गयी, मगर ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, दीक्षा, पठन, पाठन और शौध कार्य आदि के संस्थान अपने अपने काम करते रहे। उनकी संख्या में बृद्धि होती रही। मुस्लिम विद्वान राजनीतिक और शासकीय परिवर्तनों से प्रभावित हुए बिना समाज को अपने ज्ञान, विद्वत्ता, चिन्तन, शोध–कार्यों और पुस्तकों आदि के माध्यम से लाभ पहुंचाते रहे। जब उन्दलिस (स्पेन) में मुसलमानों की मजबूत व स्थिर सरकार स्थापित हुई तो खुलफ़ा और शासकों ने वहां के शहरों और गावों में मकतब, मदरसे और उसके बाद उच्च शिक्षा के लिए बड़ी संख्या में संस्थान भी स्थापित किए। एक एक गांव में कई, कई मदरसे खोले गए और शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी, मगर उस पर कोई शुल्क नहीं था। उन्दलिस के प्रसिद्ध शहरों कर्तबा, गरनाता, अशबीला और मरसीलिया में उच्च शिक्षा के बड़े बड़े केन्द्र स्थापित हुए, जिनमें आवासीय सुविधाएं, पाठ्यक्रम और शिक्षा का स्तर बड़े ऊंचे दर्जे के थे जिनमें ज्ञान एवं कला के शिक्षण के अलग अलग विभाग थे।

कर्तबा के शिक्षण केन्द्र का पाठ्यक्रम, शिक्षा का स्तर, शिक्षण पद्धति और अध्यापकों की योग्यता की ख्याति पश्चिम व पूर्व में समान रूप से पहुंची। अतः दूर दूर से छात्र लम्बी यात्रा की कठिनाइयों और परेशानियों के बावजूद

कर्तबा का रूख़ किरते। यूरोप उस समय अपनी अज्ञानता के सबसे अंधेरे दौर से गुजर रहा था और ज्ञान से लगभग पूरी तरह अनभिज्ञ था, क्योंकि ईसाई पादरियों ने ज्ञान प्राप्ती पर बड़ा पहरा लगा रखा था। आधुनिक ज्ञान एवं स्कूलों के नाम से भी उन्हें चिढ़ थी और इसकी प्राप्ती पर कलीसा की ओर से भी पाबन्दी थी। जब कर्तबा विश्व–विद्यालय का वर्णन उसके नवयुवकों तक पहुंचा तो वे तमाम पाबन्दियों के बावजूद उन्दलिस आए और कर्तबा विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। विश्वविद्यालय के जिम्मेदारों ने उनका भव्य स्वागत ही नहीं किया और उनकों केवल ज्ञान की प्राप्ती का अवसर ही उपलब्ध नहीं कराया बल्कि हर प्रकार की सुविधाएं भी दी। आवास और भोजन की व्यवस्था से लेकर पुस्तकें भी मुफ्त उन तग पहुंचाया इस प्रकार यूरोप ने मुस्लिम उन्दलिस में ज्ञान की जलाई हुई शमा से प्रकाश हासिल किया और अपने गहरे अंधकार को दूर किया।

सातवीं सदी हिजरी के अन्त में जब सुलतान उसमान बिन अन्तुगरल ने तुर्की खिलाफत की स्थापना रखी, तो उसने सबसे पहले मकतब व मदरसा स्थापित किया। दीन के मौलिक उसूल व नियमों की शिक्षा के साथ साथ हथियार चलाने की कला को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया। लेकिन चूंकि उसकी सारी की सारी व्यस्तता सलतनत की स्मृद्धि उसको शक्तिशाली बनाने और विरोधी गिरोहों व दुश्मनों से मुकाबले तक सीमित रही, इसीलिए उच्च शिक्षा और उसके प्रबंध की ओर ध्यान न दे सका।

उसके बेटे और उत्तराधिकारी सुलतान अदर खां ने सलतनत की बाग डोर संभालते ही राजधानी को शहर बोरसियह स्थानान्तरित कर दिया। क्योंकि उसकी भूगोलिक स्थिति सैनिक दृष्टिकोण से अधिक उचित थी। उसने ऐशियाए कोचिक के दूसरे क्षेत्रों को फतह के लिए सेना भेजी और स्वयं राजधानी बोरसियह को नए अन्दाज से आबाद और संगठित करने की ओर ध्यान दिया। सरकारी और शहरी जरूरतों को देखते हुए विभिन्न भवन निर्माण कराए। इसी के साथ कई मदरसे और जरूरतमन्द व निर्धन लोगों के लिए विश्राम गृह भी निर्माण कराये। छोटे मदरसों, मस्जिदों और खानकाहों व विश्राम गृह के अलावा बोरसियह में उच्च शिक्षा के संस्थान और शहर अज़बिक में दूसरा बड़ा शैक्षिक संस्थान स्थापित किया, जिस में उस दौर के प्रमुख व श्रेष्ठ विद्वानों के खाने व रहने के अलावा उनकी आर्थिक सहायता के लिए छात्रवृत्ति भी देने की व्यवस्था की। इसके बाद उसमानी खुलफा में सुलतान मुहम्मद फातेह, सुलतान सुलेमान कानूनी, सुलतान सलीम और सुलतान अब्दुल हमीद ने ज्ञान और विद्वानों को बड़ा महत्व दिया और अपनी विशाल व शक्तिशाली खिलाफ़त में मदरसों, उच्च शिक्षा के संस्थानों और विश्वविद्यालयों की भी स्थापना की, जिनमें हजारों छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा निःशुल्क थी। खाने व ठहरने के अलावा छात्रवृत्ति भी दी जाती थी और यह काम बराबर होता रहा।

भारत–पाक उप महाद्वीप में मुस्लिम विजेताओं के साथ ज्ञान पहुंचा। मावराउन्नहर (इराक़) से यहां आने वाले छात्रों ने शासकों के इशारे पर और साहस बढ़ाने से पहले सिन्ध और मुलतान में मदरसे स्थापित किए। इसके बाद लाहौर और दिल्ली में ज्ञान की ज्योति रोशन हुई। सुलतान गयासुद्दीन बलबन के कार्यकाल में दिल्ली में कर्तबा और बग़दाद की याद ताज़ा हो गयी। सुलतान की स्थापित की हुई शिक्षण संस्था 'दारूल उलूम' में उस दौर के प्रमुख विद्वान अध्यापक थे। उनमें से कुछ के नाम यह हैं; मौलाना शमसुद्दीन ख्वारिज्मी, शमसुद्दीन कौशबी, बुरहानुद्दीन बलखी, बुरहानुद्दीन बज़्ज़ाज़, नजमुद्दीन दमिश्की और कमालुद्दीन ज़ाहिद जैसे उच्च अध्यापक इस महत्वपूर्ण काम पर नियुक्त थे।

सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में प्रसिद्ध इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बर्नी के अनुसार ४६ विद्वान ऐसे जमा हो गए थे, जिनकी मिसाल किसी और देश में नहीं थी। उनमें से कुछ के नाम यह है; जहीरूद्दीन भकरी, फ़रीदुद्दीन शाफ़ओ, हमीदुद्दीन मुखलिस, शमसुद्दीन काशानी, फख़रूद्दीन हांसवी, वजीहुद्दीन राज़ी और ताजुद्दीन कदम, मुहम्मद शाह तुग़लक़ और फिर उसके बाद मुगलकाल में पूरा देश मलिकुल–उलमा, दारूल उलूम और दर्सगाहों का केन्द्र बन गया। दिल्ली, पंजाब, गुजरात, हैदराबाद में बड़े बड़े शैक्षिक संस्थान स्थापित हुए। जौनपुर में शिक्षा व प्रशिक्षण का इतनी अधिक चर्चा हुई कि लोग उसे शीराज़े हिन्द के नाम से याद करने लगे।

अन्त में हिन्द का वह मुबारक और मोहसिन घराना ज्ञान एवं व्यवहार में पठन पाठन का केन्द्र बना जिसके प्रकाश ने पूरे हिन्दुस्तान को उज्जवल

व चमकदार बना दिया। मेरा अभिप्राय हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहम. के घराने से है, जिनके वालिद शाह अब्दुर्रहीम का स्थापित किया हुआ पुरानी दिल्ली मेंहदियान का मदरसा रहीमिया १८५७ ई० के भयानक हंगामें के बाद तक शेष रहा और ज्ञान के इच्छुकों की प्यास बुझाता रहा। इसी मदरसे से शिक्षा पाने वाले छात्रों और विद्वानों ने मदरसे स्थापित किए जो दीन की बड़ी सेवाएं अन्जाम दे रहे है, जिनका लाभ इस दौर में भी पहुंच रहा है।

अरब और अरब से बाहर के देशों और शहरों तक मुस्लिम हुकूमतों में विभिन्न दौर में स्थापित किए हुए मदरसे और मुख्य रूप से उच्च शिक्षा के संस्थानों में अनेक विषयों के अलग अलग विभाग थे। कुछ मदरसे और विभाग कुरआन पाक के हिफ़्ज़, टीका और क़िराअत व तजवीद के लिए विशेष रूप से मौजूद थे। कुछ मदरसे हदीस शरीफ़ के लिए कुछ तिब्ब व हिकमत के लिए और कुछ अनाथों के लिए खास थे।

दसवी सदी हिजरी के इतिहासकार व विद्वान नअीमी ने अपनी किताब 'अद्दारस फी तारीखुल मदारिस' में केवल दमिश्क के मदरसों व वक़्फ़ संस्थानों की सूची अंकित की है, जिससे पता चलता है कि केवल दमिश्क में कुरआन शरीफ के लिए ७ मदरसे, हदीस शरीफ़ के लिए १६ मदरसे, कुरआन और हदीस के लिए सम्मिलित ३ मदरसे, फ़िक़्ह शाफई के लिए ६३ मदरसे, फ़िक़्हे हनफ़ी के लिए ५२, फ़िक़्हे मालिकी के लिए ४ फ़िक़्ह हम्बली के ११ मदरसे थे।

इसके अलावा लिब्ब (चिकित्सा संबंधी) व गणित के मदरसे, खानकाहें, सराएं, विश्राम गृह और मस्जिदों में स्थापित किए हुए थे, जिन सब के अन्दर शिक्षा की बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। अन्त में अल्लामा इब्ने कसीर का ६२१ हिजरी की घटनाओं के संबंध में यह बयान भी देखिए:

'इसी साल बग़दार के मदरसे मुस्तनसरियह का निर्माण पूरा हुआ, इस जैसा मदरसा इससे पहले नहीं बनाया गया। इसमें चारों फ़िक़्ही मज़ाहिब (हनाफी, शाफिई, मालिकी, हम्बली) के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। हर फिक़ाह के ६२ विद्वान इसमें शिक्षा देते हैं। चार सहायक अध्यापक और हर मज़हब का एक एक शेखुल हदीस, दो दो कारी और उस सुनने वाले और चिकित्सा ज्ञान का एक प्राचार्य और दस लोग चिकित्सा शिक्षा के प्रेक्टीकल विभाग में काम करते है। एक विभाग अनाथों के लिए अलग है। इन सबकी ज़रूरतों को मदरसा ही पूरा करता है। एक विभाग अनाथों के लिए अलग है। इन सबकी ज़रूरतों को मदरसा ही पूरा करता है। उसके पुस्तकालयों में किताबों की संख्या इतनी अधिक है कि इससे पूर्व इतनी बड़ी संख्या के बारे में नहीं सुना गया, उनकी किताबत और उनकी जिलदे अति सुन्दर और आकर्षक है।''

आपसी मेल जोल

आपस के मेल मिलाप का फ़ाइदा और आपस में फूट तथा लड़ान के नुक्सान को सभी मानते हैं और हर मुसलमान चाहता है कि आपस में लड़ाई न हो अगर हम लोग तीन बातों पर जम जाएं तो हमारे इख़्तिलाफ़ात (मतभेद) ख़त्म हो सकते हैं और मेल रह सकता है।

पहली बात अल्लाह की महब्बत सब से ज़ियादा हो, कुरआन मजीद में आया है ''जो लोग ईमान लाए उन में अल्लाह की महब्बत सब से ज़ियादा होती है।'' (२:१६५)

अल्लाह तआला अपने रसूल को आदेश देते हैं कि ''कहिये : अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह के महबूब (प्रिय) हो जाओगे।'' (३:३१) दूसरी बात अल्लाह के रसूल की महब्बत सारी मख़्लूक से ज़ियादा यहां तक कि अपनी जान से भी ज़ियादा हो (मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक़) तीसरी बात अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैरवी। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस ने मेरी सुन्नत (राह) छोड़ी वह मेरा उम्मती नहीं। (इब्नि माजा) पस हर मुसलमान का प्रत्येक काम सुन्नत के मुताबिक हो।

Mob: 9415006053
Mohd. Irfan
Proprietor
न्यू करीम ज्वैलर्स
NEW KAREEM JEWELLERS
Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

अपने को बदलने की कोशिश कीजिये

मु० गुफ़रान नदवी

कुछ भलेमानुस हमेश रूठे हुए से दिखाई देते हैं, कभी गुमसुम, कभी गुर्राते हुए, उन्हें ज़माने की एक भी कल सीधी नज़र नहीं आती, जहां देखते है चूलें ढीली ही पाते है, कोई भी चौकस नहीं मालूम होता, कदम कदम पर उनका दिल कुढ़ा करता है नागवारी (अप्रियता) बढ़ती रहती है, और जज़बात (मनोप्रभाव) का ठहराओं कम होता जाता है, ज़रा सी ज़हमत भी उनके लिए एक आफ़त बन जाती है। हर बात पर चिढ़ते है, हर काम पर खिसयाते है, तमाम खूबियाँ (अच्छाइयाँ) उनके लिए ख़त्म होकर रह जाती है, जब भी किसी तरफ़ देखते है खराबी ही नज़र आती है, दूसरों के ऐब (बुराई) टटोलने में मज़ा आत है, और मुख़ालिफत (विरोध) उनका मज़हब बन जाता है, यही वह लोग जो हर सुबह (प्रातः) का इस्तिक़बाल (स्वागत) एक झुंझलाहट के साथ करते है, बिस्तर से उठते उठते माहौल की गरानी (भारीपन) का बोझ उन्हें महसूस होने लगता है, चाहते हैं कि नाक पर मक्खी तक न बैठे, बिलावजह ताओ खाते है, ज़रा जूता न मिला, गर्म हो गए, नाश्ते में कुछ देर हुई बरस पड़े कभी ताअल्लुक वालों या नौकरों की शामत आती है, कभी मौसम पर लअन तअन (डांट फटकार) होने लगती है। अल्लाह अल्लाह करके ज़िन्दगी का धन्धा शुरू हो पाता है लेकिन सारा कारोबार चौपट दिखाई देता है। अफसर हैं तो कम नज़र, मातहत है तो बेख़बर, बाकी बचे साथी, उनकी राए में सबके सब इब्नुल वक़्त और जहले मुरक्कब (अवरसर वादी और अज्ञानता का भण्डार), हर एक नालाएक व नामाकूल, मतलबी और मक्कार अगर उनके मनसब में तरक्की होती है तो सिर्फ इसलिए कि रिश्तेदारों और भाई बन्दों को पहचानने और फाइदा पहुंचाने का ज़माना है। अगर वह इज्जत, शुहरत पाते हैं तो इस वजह से कि साजिश और खुशामद का ज़माना है। पड़ोसियों से यह खुश नहीं रहते क्योंकि उनके बच्चे शोर मचाते है बेअदब (असभ्य) और बदतमीज़ हैं। किसी दावत में शरीक हों तो इन्तिजाम और खाने की शिकायत करते हुए लौटें, क़िसी राहगीर (पथिक) पर अगर नज़र पड़ जाए तो नाक भौं सिकोड़ें। कोई सूरत का खराब निकल आता है तो कोई जामा ज़ेब (वस्त्र सुशोभित) नहीं मालूम होता, जब भी उनके सामने किसी मुलाकाती या जानने वाला का तज़किरह हो, उसकी जात पर अमल जर्राही (पोस्टमार्टम) यह फरमाएं अच्छे से अच्छे आदमी के टांके उनसे उधड़वा लीजिये, तनजियह (व्यंगिक) कहक़हे उनसे सुनिये और सर्द आहें यह भरें, ग़रज़ कि यह बन्दह दो आलम से खफ़ा अपने लिये है।

अगर यह तिरछी नज़र और ग़लत दृष्टिकोण नौजवानी के जाते जाते बदला नहीं और सीधा नही हुआ तो उसे ज़िन्दगी के कच्चेपन की अलामत (लक्षण) समझना चाहिए। समाजी जिन्दगी के तकाजों से आंखे चार न करने वाले हमेशा उखड़े उखड़े रहते हैं और उन्हें हर वक्त अपनी कमजोरियों पर पर्दा डालने की फिक्र लगी रहती है, दूसरों की बुराई ढूंढना और एतिराज़ करना इसलिए होता है कि अपनी कोताहइयों और कमियों का ग़म न सताए ऐसे लोग ज़िन्दगी के मैदान में अमली (व्यवहारिक) नहीं होते, हालात की सख्ती और वाकिआत की तलख़ी (कड़वाहट) उन्हें हक़ाइक़ (वास्तविकता) से आंखे चुराने पर आमादह कर देती है, सच्ची बात यह है कि हाथ पांव हिलाए बग़ैर ज़िन्दगी की बाज़ी जीतना मुमकिन नहीं,

ऐसे लोगों को नर्मी के साथ धीरे धीरे राह पर लगाने की जरूरत है, जब वह यह समझ लेंगे कि दिल का चैन अपने आप हासिल नहीं होता बल्कि उसके लिए बेचैन रहना पड़ता है। शुहरत ज़हमत चाहती है उसे पकडये तो भागती है, उसके ख्याल में रहिये तो खुवार (अपमानित) हो जाइये, लेकिन जौहर दिखाइये तो उसकी चमक दमक के साथ तअल्लुक (संबंध) पैदा कर लेती है, फिर उससे बचिये तब भी पीछा नहीं छोड़ती, कभी न कभी ढूंढ लेती है, हक़ीकत यह है कि नाम के लिए काम चाहिए जिन्दगी के बाग में खून पसीना एक करने से बहार आती है। लगन का सच्चा और धुन का पक्का ही फल पाता है।

●●●

जिन्न क्या कर सकते है?

अबू मर्ग़ूब

कभी शैतान जिन्न ज़ाहिर होकर भी वरग़लाता है:—

कभी शैतान कोई सूरत इख़्तियार करके ज़ाहिर होकर भी वरग़लाता बहकाता है। चुनान्चि बद्र की लड़ाई में ज़ाहिर होकर मुश्रिकीन से मदद का वअ़दा किया लेकिन जब फौजें आमने सामने हुई और मुसलमानों की तरफ़ मलाइका (फ़िरिश्ते) उतरे तो यह कहते हुए भागा कि मैं तुम से बरी हूं, मैं वह देख रहा हूं जो तुम नहीं देख रहे हो। मैं अल्लाह से डरता हूं कि कहीं अभी मेरी पकड़ न हो जाए। (अन्फ़ालः ४८)

हदीस में है कि: हज़रत अबू हरैरा (रज़ि०) की रखवाली में शैतान इन्सानी शक्ल में आकर खजूरें चुरा रहा था जिसे उन्होंने पकड़ा था और मिन्नत समाजत करने पर छोड़ दिया था। लेकिन शैतान जब भी ज़ाहिर हुआ तो यह नहीं बताया कि मैं शैतान हूं बल्कि अपने को छुपाए रखा। चाहे वह जानी पहचानी शक्ल में आया हो या अनजानी शक्ल में।

कुछ लोग हैं जिन पर शैतान का क़ाबू नहीं चलता:—

शैतान ने जब अल्लाह तआ़ला से क़ियामत तक ज़िन्दा रहने और आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद को बहकाते रहने की छूट मांगी तो उस वक्त वह समझ चुका था कि अल्लाह के मुख़्लिस बन्दों पर उसका क़ाबू न चल सकेगा, इसीलिये उसने कहा था कि "सब को बहकाऊंगा तेरे मुख़्लिस बन्दों को छोड़कर" (स्वादः ८२,८३) अल्लाह तआ़ला ने भी मस्लहतन (नीति के अन्तर्गत) छूट देते हुए फ़रमा दिया था कि: मेरे बन्दों पर तेरा काबू न चल सकेगा सिवाए उनके जो तेरी पैरवी करने वाले गुमराह लोग हैं।(हिज्रः ४२)

सूरत्तुन्नह्ल की आयात ६८,६९ और १०० का अनुवाद इस प्रकार है:—

"तो जब आप क़ुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मर्दूद के शर से अल्लह की पनाह मांग लिया करें यक़ीनन उसका क़ाबू उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते है उसका क़ाबू तो बस उन लोगों पर चलता है जो उससे तअ़ल्लुक रखते हैं और अल्लाह का शरीक ठहराते है।"

बेशक शैतान का क़ाबू अल्लाह के ख़ास बन्दों पर नहीं चलता, फिर भी वह बाज़ नहीं आता वह बड़े—बड़े बुज़ुर्गों को भी बहकाने या तकलीफ़ पहुंचाने की कोशिश करता ही रहता है। वह सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) के पास भी आया। मश्हूर वाक़िआ़ है जिसे इब्ने रजब हंबली ने किताब तबक़ाते हनाबिला में आप के हालात में आप के बेटे मूसा के हवाले से लिखा है कि आप ने फ़रमायाः मैं एक रेगिस्तानी सफ़र में था कई रोज़ तक मुझे पानी न मिला। मेरी प्यास सख़्त हो गई कि एक बादल ने मुझ पर साया किया और उस से ओस की तरह कुछ मुझ पर बरसा जिस से मेरी प्यास बुझी। फिर मैं ने उफ़ुक पर एक नूर देखा जिस से मुझे आवाज़ दी गई कि अ़ब्दुल क़ादिर मैं तेरा रब हूं। मैंने तुझ पर हराम चीजें हलाल कर दीं पस मैंने कहाः अ़ऊ़ज़ु बिल्लाहि मिश्शैतानिर्रजीम ऐ मलऊन दूर हो पस वह नूर ज़ुल्मत (अंधेरे) में बदल गया, उसकी शक्ल धुएं जैसी थी उस में से आवाज़ आई कि ऐ अ़ब्दुल क़ादिर तू अपने इ़ल्म अपने रब के हुक्म और अपनी मनाज़िल के अह़वाल के फ़हम (बुद्धि) के सबब मुझ से नजात पा गया वरना इस जैसी चालों से मैं ने सत्तर अहले तरीक़ को गुमराह (पथभ्रष्ट) किया। हज़रत शैख़ फरमाते हैं कि मैंने कहा मेरे रब का फ़ज़्ल और उसका एह़सान है। ख़ुदा की पनाह ! जिन अहले तरीक़ को उस मदूर्द ने गुमराह किया अल्लाह जाने कैसे गुमराह किया या फिर उसकी बात का क्या एतिबार वह झूठ भी हांक सकता है।

शैतान अगर्चि नाकाम है और नाकाम रहेगा लेकिन वह हिम्मत नहीं हारता। वह सह़ाब—ए—किराम के पास भी आता रहा। वह तो अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के पास भी कोशिश करके रहता है। हज़रत अय्यूब (अ़०) की दुआ कुर्आने मजीद में है "ऐ मेरे रब शैतान ने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई" (स्वादः ४१) फिर अल्लाह ने आप की तकलीफ़ें दूर फ़रमाई और निअ़मतों से नवाज़ा।

ख़ुद हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर आग का अंगारा फेंकने की कोशिश की, आप ने अल्लाह की पनाह मांगी और उसपर लानत की और तीन बार फ़रमाया अ़ऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन्क व अलअ़नुक बिलअ़नतिल्लाहि (सह़ीह़ मुस्लिम)

(शिक्षा दीक्षा)

में नमाज का रोल

हैदर अली नदवी

बचपन की आयु बड़ी अहम होती है क्योंकि अच्छी या बुरी आदतें इसी उम्र में पड़ती है इस आयु में माता पिता को अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इस उम्र की थोड़ी भी लापरवाही आगे चलकर बहुत बड़ी खराबी का कारण बन सकती है शुरू में माता पिता लाड प्यार में गलत आदतों की खातिर में नही लाते बड़े होने पर जब यही आदतें बच्चे की फितरत बन जाती है तो रोते फिरते हैं प्यारे नबी (स०) ने एक मौके पर इर्शाद फरमाया कि "अपनी औलाद को सात वर्ष की आयु में नमाज का हुक्म दो और १० वर्ष की आयु मं नमाज न पढ़ने पर मारो आप गौर करें कि बच्चे पर अभी नमाज फर्ज नहीं है वह नमाज के आदाब से वाकिफ भी नही है फिर आप (स०) ये आदेश दे रहे हैं चूंकि नमाज वह इबादत है जिसके बारे में अल्लाह ने फरमाया : बेशक नमाज बुरी बातों और ना शाइस्ता हरकतें (खुराफातों) से रोकती है– इसी लिए अल्लाह के संदेष्टा मोहम्मद (सल्ल०) ने मां–बाप को आदेशित किया कि अपने बच्चों को इसका आदी बनाओ और सात वर्ष की आयु से हुक्म दिया ताकि बच्चा जब तक बालिग हो उस वक्त तक नमाज उसकी आदत में शामिल हो जाए वह नमाज के मसाइल सीख कर पुख्ता हो जाए। जैसे ही नमाज फर्ज हो तो पहले ही दिन से उसकी नमाज कामिला (पूर्ण) हो नमाज की बरकतें उसके अन्दर अपना घर बना चुकी हों नमाज की बरकत से उसके दिल में फुहश और गलत बातों से नफरत बैठ चुकी हो और वह समाज के लिए हितकर साबित हो अब आइये हम आज अपने समाज पर नजर डालें कि कितने मां बाप हैं जिन्होंने प्यारे नबी के इस आदेश को गम्भीरता से लेकर सात साल की आयु में अपनी औलाद को नमाज का आदी बनाना शुरू किया है। शायद एक प्रतिशत भी नही मिलेंगे यही कारण है कि आज की औलाद नाफरमान अैयाश बुराइयों की खूगर बनती जा रही है फिर मां बाप भी शिकायत करते हैं कि हमारी औलाद गलत राह पर पड़ गयी हमारी सुनती नहीं है हर समय टीवी के आगे बैठी रहती है मौलाना साहब आप ही समझा दें। अरे नबी (सल्ल०) ने तो सात साल की आयु में नमाज पढ़ाने का हुक्म देकर नेकी का बीज बोने का आदेश दिया था लेकिन आप ने उस आदेश की अवहेलना करके बुराई (बदी) का बीज बोया, औलाद के सारे चोंचले पूरे करते रहे कभी नमाज के लिए डाटा फटकारा तक नही नमाज की आदत डलवाने की कोशिश की तौफीक कभी न हुई। हर माता पिता का दायित्व है कि अपनी औलाद कां पांच वक्त की नमाज की फिक्र सात साल की आयु से करे। नमाज के मसाइल नमाज की अहमियत नमाज के फायदे, नमाज छोड़ने के नुक्सान न ये सिर्फ बताएं बल्कि उनके दिल में बिठाएं कि वह नमाज के फायदे व नुक्सान को उससे ज्यादा समझें जितना दुनिया की चीजों के फायदे या नुकसान को समझते हैं और ये उसी वक्त होगा जब वालिदैन के अन्दर ये बात होगी जैसे हम उनके भविष्य की उनकी तालीम की उनके स्वास्थ्य की, चिन्ता करते हैं उससे अधिक चिन्ता हमें उनके दीन की करनी पड़ेगी तब बात बनेगी अगर हमने ऐसा नहीं किया तो उनके बिगाड़ उनकी बे दीनी पर कल कयामत में हमारी गर्दनें भी नाप दी जाएंगी। आज हमारे समाज में ये बहुत बड़ी मुजरिमाना लापरवाही बढ़ती जा रही है और ये बात दावे के साथ कही जा सकती है कि बच्चों की दीनी हैसियत पर १ प्रतिशत भी लोग ध्यान नहीं देते हैं हम जुमे की नमाज में बच्चों को ले जाकर अपना पल्लू झाड़ लेते हैं इसी फिक्र की कमी के कारण बच्चे जैसे, तैसे कुरआन का नाज़िरा कर के और मामूली उर्दू पढ़ कर भी बेदीन के बेदीन और बे नमाजी ही रहते हैं। होना तो ये चाहिए कि अगर हमारी औलाद बे दीन और बेनमाजी है तो हमारी रातों की नींद उड़ जाए हमारे घर की यह प्रमुख समस्या बन जाए कि जिस औलाद को आज हम नाज नेमत में पाल रहे हैं उसकी मामूली तक्लीफ से बेचैन हो जाते हैं कल यही बेदीन औलाद जहन्नम का ईंधन बनेगी। अगर हम अपनी औलाद के शुभ चिंतक हैं तो हमें ये करना पड़ेगा और सात साल से ही औलाद को नमाजी बनाना पड़ेगा वरना कल हमारी औलाद ही हमें माफ नहीं करेगी।

रात के पिछले पहर
उठ खुदा को याद कर
मन को तू संतुष्ट कर
रब से अपने मांग कर

नई नई तिब्बी बातें

विटामिन सी और ब्लड प्रेशर

दुन्या के कई हिस्सों में होने वाले रिसर्च से यह बात साफ है कि विटामिन सी का जियादा इस्तेमाल करने वालों का ब्लड प्रेशर कम रहता है। माहिरीन के खयाल में यह विटामिन ग़िज़ा में शामिल उन अज्ज़ा (अंशों) को मोतदिल (संतुलित) कर देता है जो ब्लड प्रेशर का सबब बनते हैं।

अमरीका में होने वाले एक ऐसे ही रिसर्च से भी यही साबित हुआ कि यह विटामिन ब्लड प्रेशर को कम रखता है जबकि ऐलसियम, विटामिन ई, और विटामिन ए के इस्तेमाल से ब्लड प्रेशर में कमी नहीं देखी गई।

वर्ज़िश (व्यायाम) कोलेसट्रोल को रोकता है –

इस में शक नहीं खाने पीने के परहेज़ से खून में कोलेस्ट्रोल की सतह कम होती है लेकिन इसके साथ वर्जिश (व्यायाम) शामिल कर लेने से यह सतह बड़ी तेजी से गिरने लगती है।

रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक जिन ३७७ मर्द और औरतों के खून में मुज़िर (हानिकारक) कोलेस्ट्रोल, एलडीएल की सतह ज़ियादा और मुफीद (लाभदायक) कोलेस्ट्रोल की सतह कम थी, उन्हें एक साल तक ग़िज़ाई परहेज़ के साथ वर्ज़िश (व्यायाम) कराने से उनके खून में एल.डी.डल. की सतह में दुगनी कमी हो गई, जबकि यह कमी खास तौर पर औरतों में ज़ियादा दिखाई दी – डाक्टर पेन्ट्रोड की तहक़ीक़ (रिसर्च) के मुताबिक वर्ज़िश व्यायाम से पेट की चर्बी कम होती है। यह चर्बी जिगर में ब्लेड सरकुलेशन में रूकावट बनती है जिसकी वजह से वह जिगर पहुंचने वाले खून में शामिल चर्बी को हानिकारक कोलेस्ट्राल में बदल देता है लेकिन जब पेट की चर्बी कम हो जाती है तो वह एलडीएल कम बनाता है।

इसके अलावा गिज़ाई परहेज़ के साथ चूंकि वर्जिश (व्यायाम) से वजन कम होता है इसलिए भी एलडीएल, की सतह कम हो जाती है इसलिए रोग़नी अजज़ा (चिकनाई अंशों) में कमी के अलावा वर्ज़िश (व्यायाम) भी कोलेस्ट्रोल में कमी के लिए ज़रूरी है।

अय्याम (मासिक धर्म) की तकलीफ का एक महत्वपूर्ण कारण

मासिक धर्म के शुरू होने से पहले तकलीफों का इलाज यह नही है कि कैफीन और सोडियम की मात्रा कम कर दी जाए, बेशक यह उपाय भी लाभदायक होता है, लेकिन जियादा तर औरतों में ज़िंक और मैग्नीशियम की कमी भी एक बड़ी वजह होती है, इस सिलसिले में होने वाले रिसर्च के मुताबिक जो औरतें सन्तुलित आहार लेती हैं वह इन तकलीफों से आमतौर पर सुरक्षित रहती हैं, इन गिजाओं (आहार) में दालें विशेष रूप से आती हैं क्योंकि उनमें यह दो खनिज अंश मौजूद होते हैं, माहिरीन (विशेषज्ञ) के मुताबिक उनकी वजह से दिमाग में वह कैमिकल्स बनते हैं जो मनोभाव पर प्रभावकारी होते हैं, कभी कभी मासिक धर्म से पहले और उनके बाद कुछ औरतों के दिमाग में असतुलन पैदा हो जाता हे जिस की वजह से उनका मनोभाव का संतुलन बिगड़ जाता है, यही वजह है कि एक माहिर डाक्टर चुआंग के मुताबिक विभिन्न आहार की कमी से भी यह तकलीफ होती है फिर भी माहिरीन (विशेषज्ञों) के खयाल में उनमें जिंक, और मैग्नीशियम की क़मी अधिक महत्वपूर्ण होती है। गोश्त के अलावा विभिन्न बीज जैसे साबित दालें, झींगे, साबित अनाज आदि जिंक का अच्छा माध्यम होते हैं तो पत्ते वाली सब्जियों और दालों में मैग्नीशियम भी खूब होता है।

हवाई सफर और दांत का दर्द

दांत में दर्द हो तो हवाई सफर मत कीजिए, क्यांकि इससे उसमें इजाफा हो सकता है, दुखते दांत में बेक्टेरिया की वजह से गैस पैदा होती है जो सफर करने से दबाव में तबदीली से फैलती है, इसे तिब्बी परिभाषा में "टूथ इस्कूइज" अर्थात दांत का निचोड़ या दबाव कहते हैं।

हवाई सफर से अधिक मात्रा में दांत की तकलीफ बढ़ सकती है। केलीफोरनिया यूनिवर्सिटी के डाक्टर गिरेमालदी डीडी एस के मुताबिक दुखते दांत में बन्द हो जाने वाली हवा से बहुत तकलीफ देने वाला दर्द हो सकता है। इसके अलावा अगर कुछ दिनों पहले ऊपर का कोई दांत निकलवाया

गया हो तो उसकी वजह से नाक के गढ़ों (साईनेस) में भी तकलीफ हो सकती है, इसलिए सफर का इरादह हो तो दर्द दूर करने वाली दवाओं के अलावा साईनेस की तकलीफ दूर करने वाली गोलियां खा लेनी चाहिएं बल्कि अच्छा है कि डाक्टर से एक रोज पहले मशविरा कर लिया जाए।

नमक, दांतों का दोस्त

आमतौर पर लोग सफर और आने जाने के समय में दांतों की सफाई पर ध्यान नहीं देते, बस एक आध कुल्ली काफी समझी जाती है, सफाई का यह तरीका मुनासिब (उचित) नहीं होता, यदि अधिक व्यवस्था न की जाए तो कम से कम एक गिलास पानी में आधा चाय का चम्मच नमक घोल कर सुबह शाम बल्कि हर खाने के बाद अच्छी तरह कुल्लियां करते रहने से दांत साफ और सुरक्षित रहते हैं मीठा सोडा (बेकिंग पाउडर) का प्रयोग भी बहुत लाभदायक सिद्ध होता है, साथ ले जाना संभव हो तो हाइड्रोजन प्रोक्साइड की शीशी साथ रख लेनी चाहिए इसकी कुल्लियां भी दांतों के लिए मुनासिब होती हैं।

इन तीनों चीज़ों से कुल्ली करना उन लोगों के लिए भी बहुत मुफ़ीद (लाभदायक) है जिनके मुंह में थूक कम बनता हो, थूक की कमी से दांतों की कुदरती सफाई (प्राकृतिक स्वच्छता) का अमल बुरी तरह प्रभावित होता है, डाक्टर अरून डी मेन्डल डीडीएस (कोलंविया यूनिवर्सिटी) के मशवरे के मुताबिक खाने के बाद आठ ओंस पानी में एक चाय का चम्मच सोडा मिलाकर ३० सेकेण्ड तक अच्छी तरह कुल्लियां करें फिर हाइड्रोजन प्रोक साइड दो औन्स पानी में मिलाकर कुल्लियां करें, यह खालिस इस्तेमाल करने से मुंह में जलन होती है, इसके अलावा उसे मुसलसल आठ दिन से जियादा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

सोने के दांत न लगवाइये

एक जमाने में लोग बड़े शौक़ से अपने दांतों पर सोने का ख़ोल चढ़वाया करते थे, इस उद्देश्य के लिए चांदी भी इस्तेमाल होती थी, इन दिनों पश्चिमी देशों में नौजवान वर्ग यह ख़ोल बड़े शौक से दांतों पर चढ़ा रहे हैं, यह खोल पिलास और गिलू की मदद से चढ़ाए जाते हैं। समझा यह जाता है कि इसके नीचे दांत बिल्कुल महफूज (सुरक्षित) हो गए हैं? माहिरीन (विशेषज्ञों) के अनुकूल यह अमल दांतों के लिये बहुत हानिकारक है, इसके नीचे दांतों में कीड़ा लग सकता है अर्थात उनमें सूराख या खोड़ बन जाता है। जिसका खोज बड़ी देर में लगता है, इसके बाद प्रभावित दांत का इलाज बहुत मुश्किल हो जाता है, अच्छा है कि यह शौक न किया जाये दांत अपनी असली हालत और रंग ही में अच्छे लगते हैं।

मछली हफते में दोबार

मछली हफते में कम से कम दो बार जरूर खानी चाहिए यूरोप के माहिरीन (स्वास्थ विशेषज्ञ) ने लोगों को मशवरा दिया है कि वह हार्ड अटैक, फालिज, छाती के सरतान (कार बंकल) बल्कि जोड़ों की तकलीफ़ (गठिया) से महफूज (सुरक्षित) रहने के लिए हफते में दो बार मछली ज़रूर खाया करें।

इनफिलोइनजा की नई दवा

एक अमरीकी दवा बनाने वाली संस्था के एक साइनटिस्ट की सूचना के मुताबिक उन्होंने इनफिलोइनजा की एक नई दवा तैयार कर ली है, यह एक मिश्रण दवा है, जानवरों पर उसके तजुर्बात (अनुभव) कामयाब साबित हुए, उस साइनटिस्ट चाउंगकिम ने दूसरे साइनटिस्टों के साथ मिलकर इनफिलोइनजा के ए और बी टाइप वायरस की दवा जीएस ४१०४ भी तैयार की थी।

रस नहीं फल खाइये

सन्तरा कीमती विटामिन सी फोलेट और पोटैशियम का सबसे अच्छा माध्यम होता है।

आजकल लोग बहुत जियादा आरंज जूस के मतवाले होते जा रहे हैं, पहली बात यह कि जूस खालिस नहीं होता, दूसरी बात यह कि इसमें मूल अंश अर्थात रेशा न होने की वजह से केवल रस होता है गिजा में इस रेशे का सम्मिलित रहना स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। फ्लोरेडा के डाक्टर विंलयम के मशवरे के मुताबिक बेहतर यही है कि सन्तरा माल्टा वगैरह रेशे के साथ खाया जाए, सनतरा ही नहीं दूसरे फल जैसे सेब, नाशपाती, आलू बुखारा, अंगूर वगैरह पूरे खाने चाहिए, अर्थात गूदे, रेशे के साथ इस तरह उनसे आहार के आवश्यक अंश के अलावा हज्म में मदद देने वाला रेशा भी शरीर को मिलता है। इससे आंतों का काम चुस्त रहता है और यह ज़हरीला पदार्थ समेट कर बाहर कर देता है।

स्वास्थ के लिए जरूरी है कि आदमी हलके फुलके जूते पहन कर साफ सुथरी हवा में पैदल चले, गोश्त के मुकाबले में हरी ताज़ह सब्ज़ियां और फल ज़ियादा खाए।

(उर्दू मासिक पत्रिका साइंस नई दिल्ली के शुकरिये के साथ)

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत ज़ैनब (रज़ि०)

सादिका तस्नीम फारूकी

जैनब नाम, उम्मुल हकम कुन्नियत, कबील–ए–कुरैश के खानदान असद बिन खुजैमा से है। सिलसिल–ए–नसब यह है, जैनब बिन्ते जहश बिन रबाब बिन यअ़मिर बिन सबूरः बिन मुर्रह बिन कसीर बिन गनम बिन दोदान बिन सअ़द बिन खुजैमा मां का नाम अमीमः था जो अब्दुल मुत्तलिब रसूल (सल्ल०) के दादा की बेटी थी। इस बिना पर हजरत जैनब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की सगी फूफी जाद बहन थीं।

नुबूवत के शुरू ही जमाने में इस्लाम लायीं। (उसदुलगाबा भाग ५ पेज ४६३)

मुहम्मद सल्ल० ने जैद बिन हारिसा के साथ जो आप के आजाद किये हुए गुलाम और ले पालक थे उनका निकाह कर दिया, इस्लाम ने दुनिया में समानता की जो तालीम दी है और बुलन्दी पर जिस तरह ला खड़ा कर दिया है अगरचे तारीख में उसकी हजारों मिसालें हैं परन्तु यह किस्सा अपने हिसाब से उन सब पर ऊंचा दरजा रखता है क्योंकि इसी से अमली तअ़लीम की नीव कायम होती है, कुरैश और खास कर हाशिम के खानदान को शुरू ही से कअ़बः की वजह से अरब में जो दरजा हासिल था उसके लिहाज से यमन के बादशाह भी उनसे बराबरी का दावा नहीं कर सकते थे, परन्तु इस्लाम ने केवल "तकवा (परहेजगारी)" को सबसे ऊंचा कहा, इस बिना पर अगरचि हजरत जैद (रज़ि०) वजाहिर गुलाम (दास) थे मगर चूंकि (वह मुसलमान और नेक मर्द थे, इसलिए आंहजरत (सल्ल०) को उनके साथ हजरत जैनब (रज़ि०) का निकाह कर देने में कोई तकल्लुफ नहीं हुआ) तअ़लीम समानता के सिवा इस निकाह का एक मकसद और भी था जो उसदुलगाबा में जिक्र है और वह यह है,

अर्थात जहरत मु० सल्ल० ने उनका निकाह जैद (रज़ि०) से इस लिए किया था कि इनको कुर्आन व हदीस की तअलीम दें।

लगभग एक साल तक दोनों का साथ रहा, परन्तु फिर तअल्लुकात कायम न रह सके और रंजिश बढ़ती गई, हजरत जैद (रज़ि०) ने बारगाहे नुबूवत में शिकायत की और तलाक दे देना चाहा।

जैद हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में आए और कहा कि जैनब मुझसे जबान दराजी करती हैं और मैं उनको तलाक देना चाहता हूं। (तिर्मिजी पेज ५३१)

परन्तु आंहजरत (सल्ल०) बार–बार उनको समझाते थे कि तलाक न दें कुर्आन मजीद में है,

और जबकि तुम उस व्यक्ति से जिस पर अल्लाह ने और तुम ने एहसान किया था, वह कहते थे कि अपनी पत्नी को निकाह में लिए रहो और अल्लाह से खौफ करो। (अहजाब–३५)

परन्तु यह किसी तरह निबाह न कर सके और आखिर हजरत जैद (रज़ि०) ने उनको तलाक दे दी, हजरत जैनब (रज़ि०) आंहजरत (सल्ल०) की फूफीजाद बहन थी। आपके कहने से उन्होंने यह रिश्ता कुबूल कर लिया था, चूंकि जैद (रज़ि०) गुलाम रह चुके थे इसलिए हजरत जैनब (रज़ि०) को यह रिश्ता पसन्द न था बहरहाल तलाक हो गई तो आप ने उनकी दिलजोई के लिए खुद उनसे निकाह कर लेना चाहा, परन्तु अरब में उस समय तक मुतबन्ना (लैपालक) असली बेटे के बराबर समझा जाता था, इसलिए आम लोगों के खयाल से आप संकोच फरमाते थे, परन्तु चूंकि यह केवल जाहिलियत की रस्म थी और इसका मिटाना मकसूद था इसलिए इलाही आदेशानुसार आंहजरत (सल्ल०) ने हजरत जैद (रज़ि०) से फरमाया कि तुम जैनब (रज़ि०)के पास मेरा पैग़ाम लेकर जाओ, जैद (रज़ि०) उनके घर आए तो वह आटा गूंधने में लगी हुई थीं, चाहा कि उनकी ओर देखें, परन्तु फिर कुछ सोच कर मुंह फेर लिया और कहा, जैनब ! रसूलुल्लाह (सल्ल०) का पैगाम (सन्देश) लाया हूं, जवाब मिला मैं बगैर इस्तिखारा (अर्थात अल्लाह से

मश्वरा) किये कोई राय कायम नहीं करती। यह कहा और मुसल्ला (जानमाज) पर खड़ी हो गयीं, उधर रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर वही आयी कि आसमान पर उनका निकाह हो गया, आंहजरत हजरत जैनब (रज़ि०) के घर पर तशरीफ लाए और बिना इजाज़त अन्दर चले गये।

दिन चढ़े दअवते वलीमा हुई जो इस्लाम की सादगी की असली तस्वीर थी, इसमें रोटी और सालन का इन्तिजाम था, अन्सार में हजरत उम्मे सलीम (रज़ि०)ने जो आंहजरत (सल्ल०) की खाला और हजरत अनस (रज़ि०) की मां थीं, मालीदा भेजा था, यहां तक कि सब चीजें इकटठा हो गयीं तो आंहजरत (सल्ल०) ने हजरत अनस (रज़ि०) को लोगों के बुलाने के लिए भेजा, ३०० आदमी दावत में शामिल हुए खाने के समय आंहजरत (सल्ल०) ने दस–दस आदमियों की टोलियां कर दी थीं। बारी बारी आते और खाना खा कर वापस जाते थे।

इसी दअवत में हिजाब (पर्दा) की आयत उतरी जिसकी वजह यह थी कि कुछ आदमी उसी में लगे हुए थे, खाकर बातें करने लगे और इस कदर देर लगाई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तकलीफ हुई, रसूलुल्लाह (सल्ल०) संकोच की वजह से चुप थे, बार–बार अन्दर जाते और बाहर आते थे इसी मकान में हजरत जैनब (रज़ि०) भी बैठी हुई थीं और उनका मुंह दीवार की ओर था।

आंहजरत (सल्ल०) की इस हालत को देखकर कुछ लोगों को ख्याल हुआ और उठ कर चले गये हजरत अनस (रज़ि०) ने आंहजरत (सल्ल०) को जो दूसरी अजवाज (पत्नियों) के किसी घर में थे खबर दी आप बाहर तशरीफ लाए तो पर्दे का इलाही हुक्म सुनाया।

आपने दरवाजा पर पर्दा लटका दिया और लोगों को घर के अन्दर जाने की मुमानिअत हो गयी यह जीकादह पांच हि० का किस्सा है।

हजरत जैनब (रजि०) के निकाह की कुछ विशेषताएं हैं जो कहीं और नहीं पाई जातीं उनके निकाह से जाहिलियत की एक रस्म मुतबन्ना (लेपालक) असली बेटे का हुक्म रखता है मिट गयी। इस्लाम का वह अजीमुश्शान मंजर नजर आया कि आजाद गुलाम की तमीज उठ गयी पर्दा का हुक्म हुआ, निकाह के लिए वह्य आई, वलीमा में तकल्लुफ हुआ इसी बिना पर हजरत जैनब (रज़ि०) और अजवाज के मुकाबला में फख्र किया करती थीं। (तिर्मिजी पेज· ५३१ उसदुलगाबा भाग ५ पेज ४६४)

अजवाज मुतहिरात (रज़ि०) में जो बीवियों (पत्नियां) हजरत आइशा (रज़ि०) की बराबरी का दावा रखती थीं, उनमें हजरत जैनब रज़ि० खास–खास थीं, खुद हजरत आइशा (रज़ि०) कहती हैं :

पत्नियों में से वही रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नजर में इज्जत व मरतबः में मेरी मुकाबिल थीं।

आंहजरत (सल्ल०) ने पत्नियों से फरमाया तुम में मुझे से जल्द वह मिलेगी जिसका हाथ लम्बा होगा।

यह बात फय्याजी की ओर इशारा करती हैं, लेकिन पत्नियां इसको हकीकत समझीं, अतः अपने हाथों को नापा करती थीं, हजरत जैनब (रज़ि०) अपनी फय्याजी की वजह से इसकी लायक हुईं पत्नियों में सबसे पहले इन्तिकाल किया कफन का खुद सामान कर लिया था और वसीयत की थी कि हजरत उमर (रज़ि०) भी कफन दें तो उनमें से एक को सदकः कर देना, अतः यह वसीयत पूरी की गई, हजरत उमर (रज़ि०) ने नमाजे जनाजः पढ़ाई, उसके बाद अजवाज मुतहिरात (रज़ि०) से पूछा कि कौन कब्र में दाखिल होगा? उन्होंने कहा, वह व्यक्ति जो उनके घर में दाखिल हुआ करता था, अतः उसामा बिन जैद (रज़ि०) मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) अब्दुल्लाह बिन अबी अहमद (रज़ि०) ने उनको कब्र में उतारा और बकीए में दफन किया। (सही बुखारी भाग १ पेज १६१ – मुस्लिम पुज ३४ भाग २, उसुदुल ग़ाबा पेज ६५ भाग ५)

हजरत जैनब (रज़ि०) ने २० हि० मे इन्तिकाल किया और ५३ वर्ष की उम्र पाई, वाकिदी ने लिखा है कि आंहजरत (सल्ल०) से जिस समय निकाह हुआ उस समय ३५ साल की थीं, लेकिन यह आम रिवायत के खिलाफ है, आम रिवायत के मुताबिक उनकी उम्र ३८ साल की थी।

हजरत जैनब (रज़ि०) ने माल में केवल एक घर यादगार छोड़ा था जिसको वलीद बिन अब्दुल मलिक ने अपने जमान–ए–हुकूमत में पचास हजार दरहम पर खरीद लिया और वह मस्जिदे नबवी (सल्ल०) में शामिल कर दिया गया। (तबरी पेज २४४६ भाग १३)

हज़रत. जैनब (रज़ि०) कोताह कामत लेकिन खूबसूरत थीं। (जरकानी भाग ३ पेज १२८३)

रिवायतें कम करती थीं, हदीस की किताबों में उनसे केवल ग्यारह रिवायतें मंकूल हैं, रावियों में हजरत उम्मे हबीबा (रज़ि०), जैनब (रज़ि०) बिन्त अबी सलमा, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (भतीजा) कुलसूम बिन तलक़ और भी लोग दाखिल हैं।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) बड़ी ही इबादत गुजार और बहुत रोजा रखने वाली थीं।

(जरकानी बहवाला इब्ने सअद)

हजरत आइशा (रज़ि०) फरमाती हैं:

मैंने कोई औरत जैनब (रज़ि०) से ज्यादा दीनदार, ज्यादा परहेजगार, ज्यादा सच बोलने वाली, ज्यादा फय्याज, मुखलिस (खैर के काम में दिल खोल कर खर्च करने वाली) और अल्लाह की रजा जोई में ज्यादा सरगरम नहीं देखी, हां मिजाज में जरा तेजी थी, ज़िस पर उनको बहुत जल्द शर्मिन्दगी भी होती थी। (मुस्लिम भाग २ पेज ३५३।

इबादत बहुत खुशूअ व खुजूअ के साथ करतीं, एक बार आप मुहाजिरीन पर कुछ माल बांट रहे थे हजरत जैनब (रज़ि०) इस मामला में कुछ बोल उठीं, हजरत उमर रज़ि० ने डांटा, आपने फरमाया उनसे माफी मांगो यह बहुत अल्लाह से डरने वाली हैं। (उसाबा भाग ८ पेज ६३)

बहुत फय्याज थीं, खुद अपनी दस्तकारी से कमातीं और अल्लाह की राह में लुटा देती थीं, हजरत आइशा (रज़ि०) से मरवी है कि जब हजरत जैनब (रज़ि०) का इन्तिकाल हुआ तो मदीना के फकीरों और गरीबों में बहुत खलबली पैदा हो गयी और वह घबरा गये। (उसाबा ६३ भाग ८)

एक बार हजरत उमर (रज़ि०) ने उनका सालाना नफका भेजा उन्होंने उस पर एक कपड़ा डाल दिया और बरजह बिन्त राफेअ को हुक्म दिया कि मेरे खानदानी रिश्तेदारों और यतीमों को बांट दो, परजह ने कहा आखिर हमारा भी कुछ हक है? उन्होंने कहा कपड़े के नीचे जो कुछ है वह तुम्हारा है, देखा तो पचास दरहम निकले जब सब माल बांट चुकीं तो दुआ की कि अल्लाह! इस साल के बाद मैं उमर (रज़ि०) के अतिया से फायदा न उठाऊं दुआ कुबूल हुई और उसी साल इन्तिकाल हो गया। (इब्ने सअद भाग ८ पेज ७८)

●●●

कलजुग नहीं करजुग है यह

नज़ीर अक्बराबादी

तू और की तारीफ़ कर
तुझ को सना ख़्वानी मिले
कर और की मुश्किल तू हल
तुझ को भी आसानी मिले
तू और को मेहमान कर
तुझ को भी मेहमानी मिले
रोटी खिला रोटी मिले
पानी पिला पानी मिले
कलजुग नहीं करजुग है ये
यां दिन को दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़्द है
इस हाथ दे उस हाथ ले

इश्क़ व महब्बत

हकीम मुहम्मद अख़्तर

साहिल से लगेगा कभी
मेरा भी सफ़ीना
देखेंगे कभी शौक़ से
मक्का व मदीना
गो इश्क़ का मौजूद है
हर दिल में दफ़ीना
मिलता नहीं लेकिन कभी
बे ख़ून पसीना
अल्लाह रे ये जोशे
महब्बत की बहारें
इक आग का दरया सा
लगे है मेरा सीना
ऐ अश्के नदामत मैं तेरे
फैज़ • पे कुर्बां
बरसा है जो आसी पे ये
रहमत का ख़ज़ीना
या रब तेरा ये फ़ज़्लो करम
मुझ पे हुआ है
मिलता नहीं वरना ये
महब्बत का नगीना
माना कि मसाइब हैं रहे
इश्क़ में अख़्तर
पर उनके करम से जो
उतरता है सकीना

जवानी की शरअई हैसियत और कीमत

मु० गुफरान नदवी

शरीअत में जवानी की बड़ी क़ीमत है, जवानी की इबादत कामयाबी व कामरानी का एक अहम सबब है, क़ियामत के हवलनाक माहौल में जबकि सूरज सर से बिल्कुल करीब होगा, हर शख्स पसीने में शराबोर होगा, नफसी नफ़सी का आलम होगा, उस वक़्त अगर कहीं साया मिल सकता है तो सिर्फ और सिर्फ अर्शे इलाही का साया होगा उसके नीचे जिन सात लोगों को जगह नसीब होगी उनमें एक वह शख्स है जिसने अपनी जवानी अल्लाह की इबादत में गुज़ार दी।

रसूलुल्लाह (स०अ०) ने इरशाद फरमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला सात आदमियों को अपने साये में रखेगा, जिस दिन उसके साये के अलावह कहीं और साया न मिलेगा, एक तो इन्साफ़ करने वाला हाकिम, दूसरे वह जवान जो जवानी की उमंग से खुदा की इबादत में रहा, तीसरे वह जिसका दिल मस्जिद में लगा रहे, चौथे वह लोग जिन्होंने अल्लाह के लिये दोस्ती की, उसी के खातिर इकटठा हुए और उसी के खातिर अलग हुए, पांचवें वह मर्द जिसको साहिबे हैसियत खूबसूरत औरत ने (बुरे काम) के लिए बुलाया, उसने कहा : मैं अल्लाह से डरता हूं। छटे वह मर्द जिसने अल्लाह की राह में ऐसा छुपा कर सदक़ा दिया कि दाहिने हाथ से जो दिया, वह बायं हाथ तक को उसकी खबर नहीं हुई, सातवें वह मर्द जिसने अकेले में अल्लाह को याद किया और आंखों से आंसू बहाया, कियामत के दिन जिन पांच चीज़ो का हिसाब व किताब दिये बग़ैर इन्सान अल्लाह के दरबार से कदम नहीं हिला सकता, उनमें एक जवानी भी है।

रसूलुल्लाह (स०अ०) ने इरशाद फरमाया : क़ियामत के दिन इन्सान अपने रब के पास से क़दम नही हटा सकता, जब तक उन पांच चीजों के बारे में उससे मालूम न कर लिया जाए। उम्र कहां खपाई? जवानी कहां गुजारी? माल कहां से कमाया?और कहां खर्च किया? और अपने इल्म पर क्या अमल किया?

जिसने अपनी जवानी अल्लाह की मरज़ियात (अच्छे कामों) में गुज़ारी मुहर्रमात (ना जायज काम) से अपने दामन को बचाए रखा, आस पास के हैजान अंगेज़ (जोश दिलाने वाले) माहौल में अपनी इफ्फत (संयम) और पाक दामनी को तार तार न होने दिया, ऐसा जवान अल्लाह के यहां बेहद महबूब है,

फरमान नबवी है :–

अल्लाह तआला ऐसे नौजवान से बेहद खुश होता है, जिसमें बेहरारवी (पथ भ्रष्टा) नहीं।

नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में नौजवान कैसे थे?

उस ज़माने के नौजवानों में तालीम हासिल करने की बड़ी लगन थी, इसका अन्दाज़ह बुखारी शरीफ में मालिक बिन हुवैरा (रज़ि०) के बयान से होता है, वह कहते हैं –"हम लोग करीब करीब ही उम्र के चन्द नौजवान खिदमते नबवी में हाजिर हुए, बीस रातें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गुजारीं, आप (सल्ल०) बहुत रहमदिल और मिलनसार थे, जब आप को एहसास हुआ कि हम घर जाना चाहिते हैं (या हमको अपने घर जाने का शौक है) तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमसे मालूम किया कि वतन में किन किन अजीज़ों को छोड़ कर आए हो? हमने बता दिया, आप ने फरमाया अच्छा अपने घर वालों के पास चले जाओ, उन्हीं में रहो, उन्हें (दीन की बातें) सिखाओ और यह हुक्म दो।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ि०) एक नौजवान सहाबी हैं वह इल्म के बड़े शौकीन थे, इस कदर उमंग थी कि एक बार अपनी खाला उम्मुल मोमिनीन हजरत मौमूना (रजि०) से अर्ज़ किया कि मैं एक रात आप के घर गुजारना चाहता हूं ताकि रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मअ़मूल (नियम) देख सकूं, हजरत मैमूना (रजि०) ने उनका इल्मी जज़्बह और शौक देख कर इजाजत दे दी।

इन्हीं नौजवान हजरत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास का एक और वाकिआ है वह फरमाते हैं कि रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के बाद मैंने

एक अन्सारी से कहा : इस वक्त सहाबा किराम की बड़ी तादाद मौजूद है चलो उनसे पूछ पूछ कर हम इल्म हासिल करें, उन्होंने कहा सीख कर क्या करोगे, इन बड़े बड़े सहाबा के होते हुए तुम से कौन पूछने आएगा? वह तैयार न हुए तो मै तन्हा काम शुरू कर दिया बड़े सहाबा के घरों पर जाता, दोपहर का वक्त होता, वह अपने घरों के अन्दर आराम फरमा होते, मैंने उनके दरवाजे पर अपनी चादर का तकया बना कर टेक लगा लेता गर्द गुबार मेरे ऊपर आते रहते वह हज़रात बाहर आते और मुझे इस हालत में देख कर हैरत से कहते रसूलुल्लाह के चचा के लड़के हमें बुला लिया होता, खुद क्यों यह जहमत की? मैं जवाब देता कि खुद मुझे ही आने का जियादह हक़ था।

यह सिलसिला चलता रहा एक वक्त आया कि मेरे सामने भीड़ लगने लगी, वह अनसारी जिन्दह थे वह कहते यह नौजवान हमसे होशियार साबित हुआ।

हजरत मआज बिन जबल एक नौजवान सहाबी है, हिजरत के वक्त उनकी उम्र कुल १६,१७ वर्ष रही होगी, नौजवानी ही में उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया था, बड़े–बड़े सहाबा के दरमियान जब किसी मसअले में इख्तिलाफ होता तो उन्हीं से रूजूअ (मालूम) करते थे।

मुसनदे अहमद में अबू मुस्लिम ख़ौलानी का बयान है –

मैं एक बार दमिश्क वालों की मस्जिद में आया तो क्या देखता हूं कि एक हल्क़े में अधेड़ उम्र के सहाबा किराम मौजूद हैं उनके दरमियान एक नौजवान बैठा है, आंखें सुरमगीं और दांत चमकदार हैं, मजलिस वालों में अगर किसी मसअले में इख्तिलाफ होता तो उसी नौजवान से रूजूअ करते थे, मैंने अपने करीब बैठे हुए एक शख्स से मालूम किया यह कौन साहब हैं? उन्होंने कहा यह मआज बिन जबल हैं। इसी तरह का एक वाकिआ अबू इदरीस अबदी नकल करते हैं :

मैं एक मजालिस में बैठा था, जिसमें बीस सहाबा किराम मौजूद थे उनमें एक बड़ी सियाह आंखों वाला और चमकदार दांत वाला नौजवान था, उन हजरात में अगर किसी मसअले में इख्तिलाफ होता और वह नौजवान कोई राय देता तो सब उससे इत्तिफाक करते, यह हजरत मआज बिन जबल थे। उस जमाने के नौजवानों में इल्म के शौक के साथ इबादत का भी जजबह बहुत बढ़ा हुआ था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस एक नौजवान सहाबी हैं, सौम व सलात और तिलावते कुरआन करीम की हलावत मिठास उनको हासिल हो गई थी, उन्होंने इरादा कर लिया था कि दिन को रोजह रखेंगे और रातभर नफ़िल नमाजें पढ़ेंगे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इत्तिला दी गयी, आप ने फ़रमाया तुम से ऐसा न हो सकेगा, ऐसा करो कि रोजह रखो और इफ़तार भी करो रात में नमाज पढ़ो और सो भी रहो, हर महीने में तीन रोजे रख लिया करो, इसलिए कि हर नेकी का सवाब दस गुना मिलता है। अगर तुम ऐसा कर लो तो गोया तुम ने सारी उम्र रोजे रखे।

यही अब्दुल्लाह बिन अमर हैं कुरआन की तिलावत बहुत कसरत से करते थे, उनका अपना बयान है पुरा कुरआन याद कर लेने के बाद मैंने एक रात में उसे ख़त्म कर लिया, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : मुझे अन्देशा है कुछ जमाना गुजरने के बाद तुम उक्ता जाओगे, लिहाजा तुम महीने भर में एक एक खत्म कर लिया करो, मैंने अर्ज़ किया : मुझे अपनी ताकत और जवानी से फाइदा उठाने दें, आपने फरमाया : सात दिन में खत्म कर लो, मैंने अर्ज किया : मुझे अपनी जवानी और ताकत से फाइदा उठाने दें लेकिन आप (सल्ल०) ने मज़ीद इजाज़त देने से इन्कार कर दिया ।

नबी करीम (सल्ल०) के जमाने में आम नौजवानों में नमाज, रोजे जिक्र इबादत और तालीम तअललुम (पढ़ना, पढ़ाना) की अजीब गरीब उमंग होती थी।

हजरत मआज़ (रज़ि०) एक नौजवान सहाबी हैं, गजव–ए–बदर में शिरकत के वक्त उनकी उम्र कुल २०,२१ साल थी, इल्म तदरीस (पाठ पठन) में इस कदर आला दर्जे पर फाइज़ (पदासीन) थे कि उनका शुमार अहदे रिसालत के मुफातियों में होता था।

अल्लामा ज़हबी ने सियर आलामुन नुबला में लिखा है –

अहदे रिसालत के मुफातियों में मुहाजिर : हजरत उमर हजरत उस्मान, हजरत अली और तीन अन्सारी हजरत उबय्यिबन्ने कअ़ब, मआज इब्न जबल और ज़ैद थे।

यह दीनी जज़बह और हाल तो बेहतरीन सदयों के नौजनाव का था, उनके मुकाबले मे आज के नौजवान की दिलचस्पी और उनके जज़बात देखें कि उनका रूख किधर है हमारे अस्लाफ (गुज़रे हुए बुजुर्ग) किधर गए थे। और हमारा नैजवान किधर जा रहा है।

हंसी, प्रमोद भी और औषधि भी

डा० एस० एम० आरफीन
मोबाइल : 9415087198

हंसना भी इन्सान की एक जूरूरत है। बेशक मुस्कराने से भी सिहत पर अच्छा असर पड़ता है लेकिन रोजाना एक दोबार ठटठा लगाकर भी हंसना चाहिए। अल्बत्ता बहुत जियादा हंसना ठीक नही है।

इलाज में कैसे कारगर होती है हंसी:

एक दिलचप्स जानकारी!

दुनिया के कई नामवर वैज्ञानिकों डॉक्टरों ने हंसी को लेकर संजीदा अध्ययन किये है। ब्रिटेन के डॉ डेविड फेल्टेने के मुताबिक "हंसी मस्तिष्क के कई हिस्सों सहित हाइपोथैलमस का नियमन करने वाले हिस्सों को प्रभावित करती है, जो शरीर को संदेश भेजकर उचित प्रतिक्रिया करने का संदेश देते है।" नतीजतन हंसी का शरीर के बाहरी और अंदरूनी हिस्सों पर बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शरीर के अंगों पर पड़ने वाले हंसी प्रभावों की एक झलकः—

पेट, डायाफ्राम, दोनों कन्धे और चेहराः जब आप हंसते है, आपके पेट की मांशपेशियों और डायफ्राम में सिकुड़न, चेहरे की पेशियों पर खिंचाव और पीठ व कन्धों की पेशियों की कसरत होती है। ऊपरी धड़ पर इसका बेहतर प्रभाव पड़ता है।

श्वसन तंत्रः— हंसने से फेफड़ों में ज्यादा ऑक्सीजन पहुंचती है, जिससे सांस से जुड़ी पुरानी बीमारियों का सफाया होने में मदद मिलती है। जापनी शोधकर्ताओं ने कॉमेडी फिल्मों का श्वसन तंत्र का प्रभाव जानने के लिए एलर्जी से पीड़ित २६ व्यक्तियों को चार्ली चैपलिन की फिल्म दिखायी, तो उन व्यक्तियों ने दो घंटे तक एलर्जी से राहत महसूस की।

इम्यून सिस्टमः डॉ० फेल्टन के अनुसार हंसने के इम्यून सिस्टम के 'नेचुरल किलर सेल्स' और टी—सेल्स के उत्पादन को बढ़ावा मिलने में मदद मिलती है। ये बड़े पैमाने पर इम्यून सिस्टम में एंटी—वायरल ओर एंटी—टयूमर सेल्स की भूमिका निभा कर हिफाजत का काम करते हैं।

हृदयः— हंसी आपको हार्ट अटैक से बचा सकती है। हंसी यह बचाव हृदय में मौजूद रक्तवाहनियों की रक्षक 'इन्डोथेलियम' नामक परत (लाइनिंग) की सूजन को कम करती है। ब्रिटेन के मशहूर कॉर्डियोलॉजिस्ट डॉ माइकल मिलर के मुताबिक हंसने से ब्लड प्रेशर और दिल की धड़कन की गति में सुधार आता है, और नाइट्रिक ऑक्साइड का उत्पादन बढ़ जाता है।" हम आपको बता दें कि नाइट्रिक ऑक्साइड को ही "लाफिंग गैस" भी कहते हैं। इसलिए कुछ लोग यदि एक बार हंसना शुरू कर देते है तो उनके लिए हंसी रोक पाना मुश्किल है।

प्रश्न : डा० साहब मुझे महीने में दो तीन बार सायटिका की तकलीफ होती है। बाएं कूल्हें से जांघ तक दर्द होती है और जोड़ में तनाव आ जाता है।

कु० समरीन, २७ वर्ष, लखनऊ

उत्तरः आप 'कास्टिकम—२००' **'Causticam-200'** की एक एक खुराक तीन बार सप्ताह में एक बार और रसटॉक्स ३० **`Rush Tox` 30** की एक एक खुराक दिन में चार बार एक महीने तक लें। चावल और खट्टी चीजों का सेवन बन्द कर दें।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

अपनाने में स्पष्ट प्रचार के वृतान्त इस पर साक्षी है। रूश्दी जैस उपद्रवी की हरकतों के बल से भलाई अस्तित्व में आती रही है और इस्लाम विरोधी प्रोपगन्डे के परिणामस्वरूप लोगों में इस्लाम से जानकारी की भावना और जिज्ञासा पैदा हो रही है। अभी शीघ्र ही एक पादरी ने इस्लाम विरोधी प्रोपगन्डा विशेषरूप से धर्मयुद्ध विरोधी प्रोपगन्डा से प्रभावित होकर इस्लाम और ईसाईयत की शिक्षाओं की रोशनी में जिहाद का तुलनात्मक अध्ययन शुरू किया और स्वयं उसका बयान है कि जब उसने "अलजिहाद फिल इस्लाम" नामक किताब का अध्ययन किया तो उसके मस्तिष्क की गिरहें खुल गयीं और जो व्यक्ति अब तक ईसाईयत का प्रचारक था वह आज इस्लाम का न केवल आमंत्रित है बल्कि इस्लाम की दावत की तड़प उसे व्याकुल किये हुए है।

समय प्रतीक्षा में है कि इस जीवित कौम के लिये जो इस्लाम के लिए जीवित रहना चाहती है इस स्थिति में आवश्यकता निराशा की नहीं ईमानी शक्ति की है।

अनुवाद — लतीफ अहमद एम०ए०

हाथी के दांत

अनुवाद : मु० गुफरान नदवी

आफिस से निकलने के बाद सीधा मैंने घर का रूख किया, फाइलों को देखते देखते नज़र भी थक गयी और दिमाग़ भी बोझल हो रहा था, धीरे धीरे टहलते हुए मेन रोड पर आ गया, शाम का वक्त था, बाज़ार की भीड़ जोरों पर थी, हर कोई एक दूसरे को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ जाना चाहता था, वैसे भी इस शहर की ट्राफ़िक दूसरे शहरों से अलग है, न साइकिल में घनटी न रिक्शे में बत्ती, बस "शी, शी" की आवाज मुंह से निकलती, साइकिल सवार हटो बचो की आवाज़ लगाते रिक्शा चालक भागते हुए लोगों के बीच रास्ता बनाते, इसी भीड़ का एक हिस्सा मैं भी था, थकान मिटाने की गरज से हल्के कदमों से सड़क के किनारे चला जा रहा था, रोडवेज.....? आईये.....रोडवेज.....? की आवाज़ ने मुझे उसकी तरफ मुखातिब (सम्बोधित) होने पर मजबूर कर दिया, मैंने जैसे ही गरदन घुमाई. .....एक पंद्रह, सोलह साल का लड़का, जिसके पैर मुश्किल से पैडिल तक पहुंच रहे थे, रिक्शे को सरकाता हुआ मुझसे ही मुखातिब (संबोधित) होने की कोशिश कर रहा था, वह मुझसे पूछ रहा था "अंकिल रोडवेज पर छोड़ दूं, ...? मैंने उसके सवाल का कोई जवाब नहीं दिया, मैं सिर्फ उसके मासूम चेहरे और उसकी कम उमरी में जीने के लिए उसके अज़्म (साहस) को देख रहा था यह इस बच्चे का हौसला है या उसकी मजबूरी.....? यह उम्र तो उसके लिखने और पढ़ने की है..... फिर यह.....? उसके हाथ में कलम के बजाए रिक्शे की हैंडिल, पैरों में क्रिकेट, फुटबाल और हाकी के बूट के बजाए रिक्शे के पहियों को धुमाने के लिए पैडिल.... क्या माजरा है, बच्चों की दुनिया में रहते हुए उसके बचपन को कौन छीन रहा है, कौन.....? एक साथ कई सवालात मेरे जेहन के दरवाजे पर दस्तक देने लगे, मैं कुछ और सोचता कि अचानक उसने दोबारा आवाज दी, अंकिल! आईये रोडवेज.....? मैं खयालों के बादलों को चीरता हुआ बाहर आया, नहीं बेटे मुझे रोडवेज नहीं जाना, मैं यहीं रहता हूं, मेरा जवाब सुनकर बच्चे ने मायूसी से सर को हल्की सी जुंबिश दी, जैसे कह रहा हो, यह उम्मीद भी बर नहीं आई, वह आगे बढ़ गया लेकिन उसकी मायूसी के एहसास ने मेरे जिस्म में झुरझुरी भर दी, और बेएखतियार मैंने उसे आवाज देकर रूकने का इशारा किया।

अब मैं उसके रिक्शे पर सवार था लड़कपन से जवानी की तरफ बढ़ती उम्र ने सारी ताकत लगाकर रिक्श खींचने की मश्क (अभ्यास) शुरू कर दी, एक लमहे के लिये ख्याल आया कि यह मेरी जियादती है कि मैं सेहतमन्द आदमी होकर इस कम उम्र बच्चे के रिक्शे पर आ बैठा, कहीं अनजाने में अल्लाह के इस बन्दे को तकलीफ तो नहीं दे रहा हूं.....? दूसरी तरफ यह सोचता कि अगर यही सोच सबकी हो जाए तो फिर इस बच्चे को रोज़ी कैसे मिलेगी। वह अपने जिस्म को कुछ इस तरह जुंबिश दे रहा था कि रिक्शा रफतार पकड़ ले..... मैंने उसे समझाया–

"बेटे.....! तुम ज़ियादा परेशान न हो आराम से चलो, मुझे कोई जल्दी नहीं" बच्चे की मेहनत और हौसले को देखते हुये मैंने महसूस किया कि ज़रूर कोई ख़ास वजह है जिसके बाएस इस नौ उम्र ने यह रास्ता इख़्तियार किया है वरना कोई माँ बाप अपने बच्चे को यूं जिन्दगी की चक्की में पिसने को नहीं छोड़ सकते, चलते चलते मैंने उससे पूछा "बेटे....! तुम्हारा नाम क्या है? मेरे इस सवाल पर वह चौंका नहीं बल्कि बड़े पुर सुकून लहजे में बोला "गरीबी" गरीबी मेरा नाम है, मजबूरी हमारी सरपरस्त (संरक्ष) और मुश्किल (कठिनाइयां) हमारे रिश्तेदार हैं, इतना कहकर वह खामोश चलता रहा, कभी कभी अपने हाथों से चेहरे पर आए पसीनों को पोछ लेता, जवाब सुनकर मैं हक्का बक्का रहा गया यकीनन यह जवाब उम्र ने नहीं तजुर्बे (अनुभव) ने दिये हैं। आमतौर पर हम सोचते हैं कि बड़ी उम्र का आदमी ही जियादा तजुर्बेकार (अनुभवी) होता है, लेकिन इस रिक्शा खींचने वाले नई उम्र वाले बच्चे ने इस सोच को झुटला दिया था, हालात की गरदिश कम उम्री में भी इनसान को तजुर्बेकार (अनुभवी) बना, देती है, और उम्र का लंबा सफर तय करने के बावजूद जरूरी नहीं कि आदमी तजुर्बेकार (अनुभवी) हो यानी जो लोग

तजुर्बे को उम्र के तराजू में तौलते है शायद इस मुकाम पर वह बात ना तजुर्बेकार (अनुभव हीन) हैं।

अब हम शहर की गुनजान आबादी से दूर निकल आये थे, हवा का रूख़ भी मुवाफिक (अनुकूल) था, शायद अल्लाह ने इस कम उम्र रिक्शे बान की मुश्किलों को दूर करने के लिए ही ऐसा किया हो,

अंकिल आपने बताया नहीं कहां जाना है? उसने अचानक सवाल किया,

अरे...हां.....मैं तो तुम्हें यह बताना ही भूल गया, मैंने चौंकते हुए जवाब दिया, मुझे स्टेशन पर छोड़ दो!

मैं रिज़रवेशन काउन्टर से टिकट लेकर वापस आया और इधर उधर नज़र दौड़ाई, वापसी के लिए कोई रिक्शा नहीं था, वक्त गुज़ारने के लिए मैं स्टेशन के गेट पर चाय की दुकान में चाय पीने के लिए बढ़ा, चाय का गिलास हाथ में लेकर मैं बैठने ही वाला था, कि उस नौ उम्र लड़के पर मेरी निगाह पड़ी जो अभी अभी किसी और मुसाफ़िर को लेकर स्टेशन के इहाते (परिसर) में दाखिल हुआ था, मैंने उसे आवाज़ दी, एक लम्हे के लिए वह रूका और हाथ के इशारे से यक़ीन दिलाया कि आ रहा हूं, थोड़ी ही देर में वह मेरे सामने था, अपने शर्ट की आस्तीन से उसने चेहरे का पसीना ख़ुश्क किया "क्या बात है अंकिल, वापस चलना है?" हां.....वापस तो चलना है लेकिन चाय पी लूँ" मैंने कहा, फिर मैंने चाय वाले को एक चाय और दो अन्डों का आमलेट बनाने का आर्डर दिया मैंने आमलेट की प्लेट उस मासूम मेहनतकश के आगे कर दी, और तहक्कुमाना अन्दाज़ (बल प्रदर्शन आवाज़) में कहा, खाओ !

उस लड़के ने नफ़ी (नकार) में सर हिलाया, नहीं अंकिल नहीं मैं कुछ खाउंगा नहीं, बस आप चाय पीलें फिर मैं आप को लेकर चलता हूं, तब तक मैं आराम भी कर लूंगा" वह बराबर इन्कार करता रहा, लेकिन मेरे बहुत समझाने पर मान गया, अब वह आमलेट के टुकड़े मुंह में डाल रहा था, और मेरी तरफ कुछ इस नज़र से देख रहा था कि शायद मैं वापसी के किराए में उसे एडजेस्ट कर दूंगा।

मैंने उसे फिर कुरेदा "बेटे! तुम्हारी यह उम्र पढ़ने लिखने और खेलने की है फिर तुम यह.....

मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसने कहा कि अंकिल.....गरीबी का कोई बचपन नहीं होता है और यह मजबूरी है ना? उसने अपने पेट पर इशारा करते हुए कहा, यह उसे खेलने नहीं देती, अब आप ही बताएं मैं ग़लत तो नहीं बोल रहा हूं? वह मुकम्मल सवाल बन गया। आख़िर तुम्हारे वालिद तो होंगे.....?

"वालिद तो नहीं है, वालिद .. .... तो नहीं हैं" पर वालिदह और एक छोटा भाई है।" "क्या हुआ तुम्हारे वालिद को....? मैंने दूसरा सवाल किया।"

"ग़रीबी ने उन्हें बरसों पहले निगल लिया।

उस वक्त वह आईसक्रीम बेचा करते थे, जाड़े का मौसम आता तो ठेले पर फल और सब्जियां बेचते। मैं उस वक़्त एक स्कूल में पढ़ता था, बहुत शौक था मुझे कि पढ़ लिख कर इस लाइक़ बनूंगा कि अपने मुल्क व मिल्लत की ख़िदमत करूंगा। वलिद साहब भी मेरा हौसला बढ़ाते थे, वालिदा घर में ही पास पड़ोस के लोगों के कपड़े सीती थी। अल्लाह के करम से अच्छी गुज़र रही थीं एक दिन ऐसा हुआ कि इस शहर की खराब ट्राफिक की वजह से मेरे वालिद को एक मोटर साइकिल वाला कुचल कर चला गया। इससे पहले कि वह संभल पाते, फौरन ही एक साइकिल सवार ने उन्हें दुबारा धक्का मार दिया और फिर वह उठ न सके, अंकिल उस दिन से मुझे हर साइकिल व मोटर साइकिल सवार मुजरिम दिखाई देता है।

"मेरे शफीक और मेहनत करने वाले वालिद का साया मुझ पर से उठ गया था वालिदा ने बड़ी शफ़क़त (दया) से मेरी पढ़ाई करनी चाही लेकिन...." वह खामोश हो गया।

क्या बात है बेटे बोलो...शायद मैं तुम्हारी कोई मदद अल्लाह के करम से कर सकूँ– मैंने हिम्मत बंधाई "बात यह है अंकिल कि आज कल लोग मेहनतकश से सख़्त मेहनत के खुवाहिशमन्द तो रहते है लेकिन मेहनत का जाएज़ मुआवज़ह देना नहीं चाहते बस एक मजदूर यहीं पर मजबूर व बेबस हो जाता है, हालांकि मजबूर व बेबस तो वह लोग भी हैं जो मुझसे मजदूरी कराते हैं। मुझे पैसों की ज़रूरत है, इसलिये मैं अपनी मेहनत बेचकर के मुआवजह खरीदता हूं, और वह मेहनत मशक्कत नहीं कर सकते, लिहाजा अपने पैसे बेच कर मुझ जैसे लोगों से मेहनत खरीदते है, क्या मेरी यह बात ग़लत है अंकिल? वह मुझसे सवाल कर रहा था, और मैं नौ उमरी के ज़िहन से निकलते हुए जुमलों में इनकिलाब की बू महसूस कर रहा था।

"माँ को लोग सिलाई की मज़दूरी कम देते हैं, हमारी मजबूरी हमारा मुक़द्दर बन गई, इसकी वजह से कई महीने की स्कूल की फीस भी अदा न कर सका और एक दिन मेरा नाम स्कूल से ख़ारिज हो गया, पढ़ लिख कर बड़ा बनने का खुवाब अधुरा रह गया।"

तुमने इस सिलसिले में जिम्मेदार लोगों से बात क्यों नहीं की"? यहां तो बहुत से ऐसे इदारे (संस्थाएं) है, जहां से तुम्हारी मदद हो सकती है, बड़े दीनदार लोग हैं यकीनन तुम्हारी मदद करेंगे, क्या तुम उन से मिले? फिर मेरे इस सवाल पर वह तनज़ियह (व्यंगिक) मुस्कुराहट के साथ बोला "दीनदार.....हां....हां, अंकिल एक बात कहूं हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और होते है। यह दीनदार भी हमारे समाज के आज, हाथी के दांत के मिस्दाक़ (चरितार्थ) हैं। रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस सब ने सुना दी" इल्म हासिल करना हर मर्द औरत पर फर्ज़ है।" इल्म हासिल करो गोद से गोर तक" लेकिन अल्लाह के इस हुक्म पर किसी का ध्यान नहीं गया कि जरूरतमन्दों, यतीमों की मदद करो उन पर शफक़त (दया) का साया करो, एक एक शख्स के सामने अपनी तअ़लीम शिक्षा के सिलसिले में गुजारिश (प्रार्थना) की लेकिन सबने रवायती हमदर्दी (प्रथाई सहानुभूति) के चन्द मीठे बोल मेरे कानों में उंडेल दिये और हाथ में दस पांच रूपये रखकर अल्लाह व रसूल के ताबेदारों में नाम दर्ज करा लिया, हमने जब कई रोज़ तक फ़ाक़ा किया छोटा भाई, भूक से निढाल हो गया तब मुझ से बरदाश्त न हुआ मैंने उसे तसल्ली दी और अपने जानकार के जरिये एक चचा मियां से रिक्शा लिया और बीस रूपये रोजाना किराया देने की शर्त पर आज रक्शा लेकर निकला हूं क्योंकि कई रोज से मेरी मां, भाई और मैं फाका कर रहे थे, आप पहले मुसाफिर हैं जिसे मैंने स्टेशन छोड़ा और अल्लाह की रहमत, कि अब तक एक सौ रूपया हासिल कर चुका हूं। उसने मुझे जेब से रूपये निकाल कर दिखाए।

उसके चेहरे पर खुद एतिमादी (आत्मविश्वास) का असर झलक रहा था, "अंकिल मैं आपकी शफकत (दया) का इनकार इसलिए कर रहा था कि घर में मेरी मां और भाई मूके हैं मैं कैसे खालूं, लेकिन फिर यह ख़याल आया कि यह अल्लाह का रिज़्क़ है जो उसने मुझे दिया है मैं कबूल करके शुक्र बजा लाऊँ क्योंकि घर के लोगों के लिए मेहनत के ज़रिये उस मआबूद ने मुझे रूपये अता कर दिये हैं, अंकिल अब रात होने को है, मुझे घर पहुंच कर खाने पीने का सामान भी लाना है। ..

हां बेटे ..... बिल्कुल ठीक है मैं फौरन चल रहा हूं मैंने चाय और आमलेट के पैसे दिये और उस मआसूम मेहनत कश के रिक्शे पर बैठ गया, वह तेज़ तेज चल रहा था, मैंने समझाया नहीं बेटे.... आराम से चलो। दरवाजे पर पहुंचकर मैंने उसे बीस रूपये दिये।

"नहीं अंकिल यह बहुत ज़ियादा है" उसने लेने से इनकार किया।

"बेटे जियादा नही है, यह मजदूरी तुम्हारी वाजिब है, तुम्हें काफी देर तक मैंने रोके रखा।" फिर उसने खामोशी और खुशी से पैसे जेब में डाल लिये और घर की तरफ चल दिया, मैंने आवाज़ देकर रोका, वह रूका "कहीं और जाना है अंकिल... " नहीं तुम्हें बताना है कि सीधे घर जाओ और आराम से जाओ, किसी को टक्कर न मारना और हमेशा मां की दुआ लेना, वही तुम्हारा साया होंगी और एक आखिरी बात कभी किसी का दिल न दुखाना और अल्लाह से डरते रहना . .... उसने मेरी बात पर हामी भरी और सुकून से रिक्शा चलाता हुआ मेरी आंखो से ओझल हो गया, मगर लौटते वक़्त उसकी बात मुझे याद आ रही थी "आज की दीनदारी हाथी के दांत की तरह है, खाने के और दिखाने के और होते हैं .....

क्या वाक़ई वास्तविकता में ऐसा ही है?

(उर्दू मासिक पत्रिका अल–हसनात रामपुर के शुकरिये के साथ)

इजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो रह़्म नहीं करता है, उस पर अल्लाह रह़्म नहीं करता है।

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मी पर
ख़ुदा मेहरबां होगा अ़र्शेबरीं पर

दुन्या में बादशा है
सो है वह भी आदमी
और मुफ़लिसो गदा है
सो है वह भी आदमी
ज़रदारो बेनवा है।
सो है वह भी आदमी
निअ़मत जो खा रहा है
सो है वह भी आदमी
टुकड़े चबा रहा है
सो है वह भी आदमी

आवश्यकता निराशा की नहीं ईमानी क्षमता की है

अमीनुद्दीन शुजाअ़

एक गोष्ठी में जनाब मौलाना कमरूज़्ज़मां साहब आजमी ने बड़ी अच्छी बात सुनाई कि उन्होंने जब एक नव मुस्लिम के इस्लाम स्वीकार करने पर बधाई पेश की तो उसका उत्तर बड़ा यथार्थ प्रिय था। नव मुस्लिम ने कहा कि आप मुझे किस चीज़ की बधाई दे रहे है। हर बच्चा तो प्राकृतिक धर्म पर पैदा होता है। इसलिए सत्य तो यह है कि मैंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया बल्कि अपने आप की खोज की है। यह है वह सत्य जो इस्लाम को उत्पन्न परिस्थिति से संबंधित है ना कि वह प्रोपगन्डा जो इस्लाम विरोधी है कि इस्लाम संकट में है।

इस्लाम से संबद्धता की सामयिक व अस्थाई परीक्षाएं सदैव से होती रही है। इस्लामिक इतिहास का अध्ययन बताता हे कि इस मार्ग में पग पग पर आपदाएं है। नबियों के इतिहास ही को देख लीजिये उनके लिए धर्म के प्रचार के लिए जिन विभिन्न भूस्थलों का चयन किया गया प्रायः वह नर्म थीं। परन्तु अन्तिम संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो पृथ्वी प्रदान की गई वह सख्त थी, पथरीली थी। इसके अतिरिक्त यह कि वहां के निवासियों के हृदय भी नर्म न थे चुनांचि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पत्थर भी खाये लेकिन फिर भी दुआएं दीं और अपनी ईश्वर प्रदत्त शिक्षा, वैभव, प्रशिक्षण और अर्धरात्रि आर्तनाद से इन पत्थरों को मृदु दर्पण बना दिया।

एक बात उम्मत के ध्यान की अभिलाषी है कि आयत करीमा "अल्यौम अक्मल्तु लकुम दीनकुम" के उतरने और अल्लाह की ओर से दीन की पूर्ति की घोषणा के पश्चात् हज्जतुल विदाअ़ के अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आखिर सहाब–ए–किराम को क्योंकर यह सदुपदेश दिया जो उपस्थित है वह गायब तक इस्लाम के संदेश को पहुंचा दे"

चुनांचि पैग़म्बरे सहरा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रशिक्षण पाये हुए सहाब–ए–किराम दावते इस्लाम को लेकर निकल पड़े। एक गलत और पथभ्रष्ट करने वाला प्रभाव यह भी दिया जाता है कि इस्लाम केवल शक्ति के बल पर फैला है लेकिन इतिहास इसका खण्डन करता है। अत्याचार और दीनता की अवस्था में भी दावत का काम निरंतर होता रहा। इतिहास में हिरक्ल के दरबार में पेश होने वाले उस कैदी का उदाहरण विद्यमान है जिसने इस्लाम से मुंह मोड़ने से इंकार करने की सजा में पहले चरण में तो सत्ता को ठुकराया और बंदी बनना सहन किया और कारागार में अन्न–जल अत्यंत कम कर देने के परिणाम स्वरूप जब वह जीवन के अंतिम क्षणों के बिल्कुल सन्निकट पहुंच गया तो हिरक्ल ने उसे अपने दरबार में हाजिर करके उसके सामने सुअर का मांस और शराब प्रस्तुत किया और कहा कि इसे खालो कि जीवन के संकट की स्थिति में तो यह तुम्हारे लिए हलाल है लेकिन उस कैदी ने जो जवाब दिया वह उसकी प्रतिष्ठा, स्वाभिमान और ईमानी क्षमता का द्योतक है कि इस दशा में उसे खाना तेरी आत्मा और तेरे घमंड को शक्ति प्रदान करेगा। बात यहीं समाप्त नहीं हुई बल्कि हिरक्ल के दरबार में उपस्थित कई दरबारी जो अपनी आंखों से इस दृश्य को देख रहे थे उठे और उनके दिल ने गवाही दी कि इस कैदी का धर्म झूठा नहीं हो सकता। परिणामस्वरूप वह इस्लाम से सम्मानित हो गये। एक दूसरा उदाहरण इण्डोनेशिया का है। अरब मुस्लिम व्यापारियों की एक नौका डूब गयी। लेकिन वह किसी तरह अपनी जान और कुछ व्यापारिक माल बचाने में सफल हो गये। स्थिति निराशा की थी। इरादा था कि औने पौने व्यापारिक माल विक्रय करके पुनः यात्रा आरंभ कर दें परन्तु वह सच्चे व्यापारी थे। वह धैर्यपूर्वक वहां ठहरे और अपनी खास तिजारत शुरूअ़ कर दी। उनके चरित्र व कार्य ने इण्डोनेशिया के निवासियों को ऐसा प्रभावित किया कि आज संसार के नक्शे पर इण्डोनेशिया सबसे अधिक मुस्लिम जनसंख्या वाला देश बनकर उभर आया है। उधर स्पेन में मुसलमानों का वैभव व प्रतिष्ठा का सूर्यास्त हो रहा था। और उधर इण्डोनेशिया में इस्लाम का उदय हो रहा था। मुसलमानों ने यात्रा की परन्तु केवल व्यापारिक माल के साथ नहीं बल्कि जो हाजिर है वह गायब तक पहुंचा दे की धरोहर को सीने से लगाकर कुरआनी शिक्षा को सीने में उतारकर

और उसको मानव जाति के सीनों में उतार देने की भावना को अपनाकर। इस तरह जहां भी वह गये अपनी केन्द्रित आत्मा, अपने आचार–व्यवहार और अपने व्यक्तित्व के साथ गये। चुनांचि वह रोम भी गये। ईरान भी गये। मिश्र भी पहुंचे। जहां की अपनी अपनी सभ्यताएं थी। और हृदय व मस्तिष्क पर उन सभ्यताओं का प्रभुत्व था। लेकिन सहाब–ए–किराम अल्लाह के रसूल के सांचे में ढले हुए थे चुनांचि उन्होंने इन्सानों को ही नहीं दर्शन–शास्त्र को भी मुसलमान कर दिया। और दृष्टिकोण को भी इस्लामी सांचे में ढाल दिया। यह शक्ति का प्रभाव इस्लाम ही का है कि वह प्रभावित नहीं होता बल्कि प्रभाव कारी होता है।

इस्लाम के नियंत्रण और इस्लाम के प्रचार के संबंध में यह बात भी उल्लेखनीय है कि इस्लाम के प्रचारकों ने मूल जनसंख्या को कभी ध्वस्त व बर्बाद नहीं किया जबकि स्वयं को सभ्य व शिष्ट कहने वाली जातियों के इतिहास का मामला उसके विपरीत रहा है। चुनांचि आज रेड इण्डियन्स का अस्तित्व कहा है। परन्तु इसके विपरीत कुरआन धारियों और इस्लाम के नियंत्रण को जंगलों ने रास्ते दिये और बहरे जुलमात में उन्होंने घोड़े दौड़ा दिये।

एक उदाहरण मुहम्मद बिन कासिम का है। अगरचे उसने विजयी बनकर इस देश में प्रवेश किया था। लेकिन उन्होंने अपनी प्रजा के दिलों को जिस प्रकार से जीता था और यहां से मुहम्मद बिन कासिम की वापसी के परिणामस्वरूप जनता में शोक प्रकट हुआ उसका उदाहरण प्रस्तुत करने से इतिहास असमर्थ है। वास्तव में मुहम्मद बिन कासिम की आस्था में मुहब्बत ने लोगों के दिलों में घर कर लिया था।

ईरान व अफगानिस्तान से होता हुआ मुसलमान हिन्दुस्तान आया और अपने धर्म व आचार विचार अपनी सभ्यता, रहन सहन व अपनी शक्ति व निश्चितता के साथ आया और उसे अब तक सीने से लगाये हुए है। इन ध्रोहरों को चैलेन्ज भूतकाल में भी रहा है और आज भी है। और उसके विरूद्ध दूर संचार के बहुसाधनों के इस काल में प्रोपगन्डा जोरों पर है। एक बात विशेषरूप से फैलायी जा रही है कि भूतकाल में इस्लाम भी दूसरी सभ्यताओं की तरह अपनी पराकाष्ठा को पहुंच चुका था चुनांचि हर उन्नति को पतन है" के सिद्धांत के अधीन अब इस्लाम का पतन भी कोई अनहोनी बात तो है नहीं लेकिन इस्लाम और इस्लामी सभ्यता और अन्य सभ्यताओं में मौलिक अन्तर यह है कि प्रथम वर्णित का सांचा आसमानी है और उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व विधाता ने अपने जिम्मे स्वयं लिया है जबकि द्वितीय वर्णित सभ्यताएं या धर्म या तो मानव मष्तिष्क का आविष्कार थीं या फिर परिवर्तित हैं। रहा प्रोपगन्डा और हिंसा तो इसका क्रम प्रारंभ इस्लाम से हो रहा है। अबू जहल के इस्लाम विरोधी प्रोपगन्डे और हिंसा से कौन परिचित नहीं। परन्तु संसार ने देखा कि सच्चाई में बड़ी शक्ति है और झूठे प्रोपगन्डे का भाग्य है कि सच्चाई के समक्ष वह दम तोड़ दे। इसका एक उदाहरण चीन का है कि किस प्रकार एक ताबओ कैदी हिंसा का निशाना बने और जेलखाने की मुसीबतें उठायी लेकिन जब यह ताबओ कैदी जेल से मुक्त हुए तो हजारों को शिर्क व बुतपरस्ती से भी मुक्त कर गये और वह लोग इस्लाम से सम्मानित हुए तो तस्वीर का यह केवल एक रूप है कि मुसलमानों ने विजयी की हैसियत से इस्लाम की दावत दी। और उसका प्रचार किया जबकि वास्तविकता यह है कि दीनता व हीनता की दशा में भी मुसलमानों का यह धर्म प्रचार यात्रा बराबर जारी रही।

बगदाद में चंगेज के द्वारा विध्वंश व रक्तपात की कथा बजबाने हाल कह रही थी कि अब मुसलमान मिट जायगा परन्तु इस्लाम ने विजयी कौम के हृदय को विजय कर लिया और मूर्ति ग्रह से काबे को रक्षक मिल गये।

तो इस्लाम की यात्रा का एक इतिहास है जो दावत व अजीमत से भरी पड़ी है। समस्या इस बात की बिल्कुल नहीं है कि इस्लाम शेष रहेगा या नहीं। मूल समस्या यह है कि हम स्वयं वास्तविक मुसलमान हैं भी या नहीं? ईश्वर न चाहे यदि हम मुसलमान बनने के उस स्तर पर पूरे नहीं उतर सके जो अल्लाह और उसके रसूल को अपेक्षित है निःसंदेह हमारा अस्तित्व संकट में है। रहा इस्लाम तो वह कयामत तक बाकी रहने के लिए है। इसके प्रचार में न दबाव को दखल रहा है न प्रलोभन को बल्कि इसकी यथार्थता ने संसार से सदैव अपना लोहा मनवाया है। इस्लाम की स्वाभाविकता में प्रकृति ने लचक दी है। यह उतना ही उभरेगा जितना दबाया जायगा। नाइन इलैविन के बाद की परिस्थितियां और वहां इस्लाम के

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● ब्रिटेन में उर्दू फल फूल रही है:

ब्रिटेन में उर्दू तेजी से फैल रही है। विदेशी भाषाओं में उर्दू भाषा सूची में सबसे ऊपर है। गैर ऐशियाई बच्चे भी स्कूलों और कालेजों में इस भाषा को एक विषय के रूप में ले रहे हैं। गलासगो, एडमबर्ग और डंडी जहां ऐशियाई लोगों की अधिक संख्या है वहां गैर ऐशियाई लोगों में उर्दू के बारे में खास दिलचस्पी पाई जाती है। यहां लोगों के उर्दू सीखने के विभिन्न कारण हैं लेकिन अधिकांश विद्यार्थी अपने ऐशियाई सहपाठियों, मित्रों और पड़ोसियों के कारण यह भाषा सीखते हैं। थाईलैण्ड एकेडमी के उर्दू विभाग के अध्यक्ष तसनीम करीम का कहना है कि "विभिन्न सम्प्रदाय के बच्चों का आपसी मेल मिलाप इस भाषा के सीखने का मुख्य कारण है। मेरी कक्षा के अंग्रेज बच्चों की उर्दू उतनी ही पुख्ता है जैसे हिन्दुस्तानी व पाकिस्तानी बच्चों की क्यों कि वह कड़ी मेहनत करते हैं।

● बैंकाक में मुस्लिम रेस्टरांट को प्रोत्साहन

बैंकाक प्रशासन ने मुस्लिम सय्याहों (पर्यटकों) के लिए हलाल खाना तैयार कराने वाले होटलों के नाम प्रकाशित किए हैं। बैंकाक प्रशासन के पर्यटन विभाग के डायरेक्टर मिस्टर सफूट जैराफन ने बताया कि अंग्रेजी, थाई और अरबी भाषा में सरकार ने एक गाइड बुक तैयार की है जिस में हलाल खाना बनाने वाले मुस्लिम होटलों के नाम हैं। यह गाईड बुक पर्यटकों और जनता में मुफ्त बांटी जाती है। ऐसा मुस्लिम पर्यटकों की सुविधा के लिए किया गया है। गाईड में थाईलैंड की कुछ पसन्दीदः डिशेज़ और उन रेस्टरांटों व होटलों का ज़िक्र है जहां यह उपलब्ध है।

● ब्रिटेन जाने वाले इमामों और ईसाई धर्म प्रचारकों का अंग्रेजी भाषा में टेस्ट होगा

ब्रिटेन जाने वाले इमामों और ईसाई धर्म प्रचारकों को अब देश में दाखिल होने के लिये अंग्रेजी में परीक्षा देनी पड़ेगी। ब्रिटिश मुसलमानों के संगठन ने इसे एक अच्छा फैसला बताया है। ब्रिटिश होम सिक्रेटरी डेविड बलैंकेट ने कहा कि यह परीक्षा दूसरे देशों से आने वाले इमामों और ईसाई प्रचारकों के लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि इस फैसले से न केवल समाज में मेलमिलाप पैदा होगा बल्कि ब्रिटेन में पैदा हुई नई मुस्लिम नस्ल से प्रेम व्यवहार में भी आसानी होगी।

● चांद पर शहर बसेगा

चांद पर बस्ती बसाने की अपनी परियोजना की प्रस्तुति से अमेरिका के कैनेडी स्पेस सेंटर में भारतीय झंडा बुलंद करने वाली टीम वापस लौट आई है। टीम का नेतृत्व थापर इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग के प्रवक्ता मनीक कुमार ने की।

श्री कुमार ने बताया कि हमारी परियोजना के मुताबिक १३.६ किलोमीटर क्षेत्र में बसी इस बस्ती का ५५ प्रतिशत हिस्सा पहाड़ों की ओट में होगा। इस से चांद से टकराने वाले विशाल उल्का पिण्डों से काफी हद तक बचाव हो सकेगा। बस्ती के लिए चांद का वह हिस्सा चुना गया है, जहां सूरज की रोशनी सीधे नहीं पहुंचती। शहर २१ हजार लोगों के रहने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा यहां मनोरंजन के पुख्ता इंतजाम के अलावा आक्सीजन बनाने का भी प्लांट लगेगा। जल भंडारण के लिए विशाल टैंक का भी डिजाइन है। यहां पर पानी का ट्रीटमेंट प्लांट लगाने की भी योजना है ताकि सीवरेज का पानी शुद्ध करने के बाद कृषि के इस्तेमाल आ सके। यह सारा शहर बनाने में ल्यूनर कंक्रीट, टाइटेनियम का प्रयोग किया जाएगा। चूंकि चांद पर पृथ्वी की तरह रात दिन का अंतराल नहीं है, लिहाजा, यह माहौल पैदा करने के लिए गुंबद पर विशेष ल्यूनर ग्लास लगाए जाएंगे, जो १२ घंटों तक सूरज की रोशनी को परिवर्तित कर दिन का एहसास देंगे और १२ घंटों बाद यह खुद–ब–खुद बंद हो जाएंगे। इस शहर को वहां पूरी तरह बसने में १५ वर्ष का समय लगेगा और इस पर करीब २७३ बिलियन डालर का खर्च आएगा।

मनीक के अनुसार यहां कल्पना चावला के पति जेपी हैरीसन ने उन्हें भारतीय भोजन उपलब्ध कराने से लेकर हर संभव मदद व हौसला अफजाई की।